॥ श्रीः ॥

तुलसीसतसई।

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीविरचित।

जिसमें

परब्रह्म परमेश्वरके चरणारविन्दमें अनपायनी
भक्तिइष्टार्थ सातसौ विमल दोहे वर्णित हैं।

जिसको
लोकोपकारार्थ
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम प्रेसमें
छापकर प्रसिद्ध की।

सम्वत् १९७८ शक १८४३.

॥ श्रीः ॥

तुलसीसतसई ।



श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासजीविरचित ।

जिसमें

परब्रह्म परमेश्वरके चरणारविन्दमें अनपावनी भक्तिदृढार्थ सातसौ विमल दोहे वर्णित हैं ।



जिसको

लोकोपकारार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रसिद्ध की ।

सम्वत् १९७८ शक १८४३.

KITABISTAN

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७वीं गली खम्बाटालैन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये मुद्रितकर यहीं प्रकाशित किया।

श्रीः ।

तुलसीसतसई ।



प्रथमःसर्गः ।

दोहा–नमोनमोश्रीरामप्रभु, परमातमपरधाम
जेहिसुमिरतसिधहोतहैं,तुलसीजनमनकाम॥१
रामबामदिशिजानकी, लषणदाहिनीओर ॥
ध्यानसकलकल्याणकर, तुलसीसुरतरुतोर॥२
परमपुरुषपरधामवर, जापरअपरनआन ॥
तुलसीसोसमुझतसुनत, रामसोइनिर्वान ॥ ३
सकलसुखदगुणजासुसो, रामकामनाहीन ॥
सकलकामप्रदसर्वहित, तुलसीकहहिंप्रवीन ॥४
जाकेरोमैंरोमप्रति, अमितअमितब्रह्मण्ड ॥
सोदेखततुलसीप्रकट,अमलसुअचलप्रचण्ड ॥५

जगतजननिश्रीजानकी, जनकरामशुभरूप ॥
जासुकृपाअतिअघहरणि,करणिविवेकअनूप ।६।
तातमातुपरजासुके, तासुनलेशकलेश ॥
तेतुलसीतजिजातकिमि, तजिघरतरपरदेश॥७ ॥
पिताविवेकनिधानवर, मातुदयायुतनेह ॥
तासुसुवनकिमिपाइहै, अनतअटनतजिगेह ॥ ८॥
बुद्धिविनयगतिहीनशिशु,सुपथकुपथगतजान ॥
जननिजनकतहिकिमितजै, तुलसीसरिसअजान॥
माततातसियरामरुख, बुधिविवेकपरमान ॥
हरतअखिलअघतरुनतर,तबतुलसीकछुजान १०
जिनतेउद्भववरविभव, ब्रह्मादिकसंसार ॥
सुगतितासुतिनकीकृपा,तुलसीबदहिविचार। ११
शशिरविसीतारामनभ, तुलसीउरसिप्रमान ॥
उदितसदाअथवतनसो, कुबलिततमकरहान १२॥
तुलसीकहतविचारगुरु, रामसरिसनहिंआन ॥
जासुकृपाशुचिहोतरुचि,विशदविवेकप्रमान १३॥

रामस्वरूपअनूपअल, हरतसकलमलमूल ॥
तुलसीमर्महियोगलहि,उपजतसुखअनुकूल १४
रेफरमितपरमातमा, सहअकारसियरूप ॥
दीरघमिलिविधिजीवइव, तुलसीअमलअनूप १५
अनुस्वारकारणजगत, श्रीकरकरनअकार ॥
मिलतअकारमकारसों, तुलसीहरिदातार॥ १६ ॥
ज्ञानविरागैभक्तिसह, मूरतितुलसीपेषि ॥
वर्णतगतिमतिअनुहरत,महिमाविशदविशेषि १७
नाममनोहरजानिजिय,तुलसीकरिपरमान ॥
वर्णविपर्ययभेदते, कहौंसकलशुभजान ॥ १८ ॥
तुलसीशुभकारणसमुझि,गहतरामरसनाम ॥
अशुभहरणशुचिशुभकरण,भक्तिज्ञानगुणधाम १९
तुलसीरामसमानवर, सपनेहुअपरनआन ॥
तासुभजनरतिहीनअति,चाहसिगतिपरमान २०
अहिरसनाथनधेनुरस, गणपतिद्विजगुरुवार ॥
माधवसितसियजन्मतिथि, सतसैयाअवतार२१

भरणहरणअतिअमितविधि, तत्त्वअर्थकविरीति
संकेतिकसिद्धान्तमत, तुलसीवदतविनीति २२॥
विमलबोधकारणसुमति, सतसैयासुखधाम ॥
गुरुमुखपढिगतिपाइहै, विरतिभक्तिअभिराम २३
मनभयजरसतलागयुत, प्रकटछन्दयुतहोइ ॥
सोघटनाशुभदासदा, कहतसुकविसबकोइ २४॥
जतसमानततवानलघु,अपरवेदगुरुमान ॥
संयोगादिविकल्पपुनि,पदनअन्तकहजान२५॥
दीरघलघुकरितहँपठव, जहँसुखलहिविश्राम ॥
प्राकृतप्रकटप्रभावइह, जनितबुधाबुधबाम २६
दुइगुरुसीतासारगण, रामसोगुरुलघुहोइ ॥
लघुगुरुरमाप्रतक्षगन, युगलहुहरगणसोइ ॥२७॥
सहसनामसुनिभनितसुनि, तुलसीबल्लभनाम ॥
सकुचतियहहँसिनिरखिसिय,धरमधुरन्धरराम॥
दम्पतिरसरसनादशन, परिजनवदनसुगेह ॥
तुलसीहरहितवरणशिशु,सम्पतिसरलसनेह २९॥

हियनिरगुणनैननसगुण, रसनारामसुनाम ॥
मनहुँपुरटसम्पुटलसन, तुलसीललितललाम२०
प्रभुगुणगणभूषणवसन, वचनविशेषसुदेश ॥
रामसुकीरतिकामिनी, तुलसीकरतबकेश॥२१॥
रघुवरकीरतितियवदन, इवकहैतुलसीदास ॥
शरदप्रकाशअकाशछवि,चारुचिबुकतिलजास२२
तुलसीशोभतनखतगण, शरदसुधाकरसाथ ॥
मुक्ताझालरझलकजनु,रामसुयशशिशुहाथ २३॥
आतममध्यविवेकविनु, रामभजतअलसात ॥
लोकसहितपरलोककी,अवशविनाशीबात॥२४॥
बरुमरालमानसतजैं, चन्द्रशीतरविघाम ॥
मोरमदादिकजोतजैं, तुलसीतजैनराम ॥ २५ ॥
आसनदृढ़आहारदृढ़, सुमतिज्ञानदृढहोय ॥
तुलसीबिनाउपासना, बिनुदुलहेकीजोय॥२६॥
रामचरणअवलम्बबिनु, परमारथकीआश ॥
चाहतवारिदबुन्दगहि,तुलसीचढनअकाश२७ ॥

रामनामतरुमूलरस, अष्टपत्रफलएक ॥
युगलसन्तशुभचारिजग,वर्णतनिगमअनेक ३८॥
रामकामतरुपरिहरत, सेवतकलितरुठूँठ ॥
स्वारथपरमारथचहत, सकलमनोरथझूंठ ॥३९॥
तुलसीकेवलकामना, रामचरितआराम ॥
निशिचरकलिकरिनिहततरु,मोहिंकहतविधिबाम
स्वारथपरमारथसकल,सुलभएकहीओर ॥
द्वारदूसरेदीनता, उचितनतुलसीतोर ॥ ४१ ॥
हितसनहितरतिरामसन, रिपुसनवैरविहाव ॥
उदासीनसंसारसन, तुलसीसहजसुभाव ॥ ४२॥
तिलपरराखैसकलजग, विदितविलोकतलोग ॥
तुलसीमहिमारामकी, कोजगजाननयोग ॥४३॥
जहांरामतहंकामनहिं, जहाँकामनहिंराम ॥
तुलसीकबहींहोतनहिं, रविरजनीइकठाम॥४४॥
रामदूरमायाप्रबल, घटतिजानिममपाहिं ॥
बढतिभूरिरविदूरिलखि,शिरपरपगुतरछाहिं४५॥

सम्पतिसकलजगत्तकी, श्वासासमनहिंहोय ॥
श्वाससोइतजिरामपद,तुलसीअलगनखोय४६।
तुलसीसोअतिचतुरता, रामचरणलवलीन ॥
परमनपरधनहरणकहँ,गणिकापरमप्रवीन॥४७॥
चतुराईचूल्हेपरै, यमगहिज्ञानहिखाय ॥
तुलसीप्रेमनरामपद; सबजरमूलनशाय ॥४८॥
प्रेमशरीरप्रपंचरुज, उपजीबडीउपाधि ॥
तुलसीभलीसोवैदई, बेगिबांधिईव्याधि ॥ ४९॥
रामविटपतरविशदवर, महिमाअगमअपार ॥
जाकहँजहँलगिपहुँचहै,ताकहँतहँलगिडार॥५०॥
तुलसीकोशलराजभजु, जनिचितवैकहुँओर ॥
पूरणराममयङ्कमुख, करुनिजनयनचकोर॥५१॥
ऊँचेनीचेकहुँमिलै, हरिपदपरमपियूष ॥
तुलसीकाममयूखते, लागैकौनेऽरूष ॥ ५२॥
स्वामीहोनासहजहै, दुलभहोनोदास ॥
गाडरलायेऊनको, लागीचरैकपास ॥ ५३॥

चलबनीतिमगरामपद, प्रेमनिबाहबनीक ॥
तुलसीपहिरियसोवसन;जोनयवारतफीक ॥५४॥
तुलसीरामकृपालुते, कहिसुनावगुणदोष ॥
होउदूबरीदीनता, परमप्रीतसन्तोष ॥ ५५ ॥
सुमिरनसेवनरामपद, रामचरणपहिचान ॥
ऐसेहुँलाभनललकमन, तोतुलसीहितहान ॥५६॥
सबसंगीबाधकभये, साधकभयेनकोय ॥
तुलसीरामकृपालुते, भलीहोयसोहोय ॥ ५७ ॥
तुलसीमिटैनकल्पना, गयेकल्पतरुछाहँ ॥
जबलगिद्रवैनकरिकृपा,जनकसुताकोनाँह॥५८॥
विमलविलगसुखनिकटदुख,जीवनसमयसुरीति
रहितराखियेरामकी, तजेतउचितअनीति॥५९॥
जायकहबकरतूतिबिनु, जाययोगविनक्षेम ॥
तुलसीजायउपायसब, विनारामपदप्रेम ॥६०॥
तुलसीरामहिंपरिहरे, निपटहानिसुनुमोद ॥
जिमिसुरसरिगतसलिलवर,सुरासरिसगंगोद ६१

हरेचरहिंतापहिबरे, फरेपसारहिहाथ ॥
तुलसीस्वारथमीतजग, परमारथरघुनाथ ॥६२॥
तुलसीखोटेदासकर, राखतरघुवरमान ॥
ज्योंमूरखपूरोहितहि, देतदानयजमान ॥ ६३ ॥
ज्योंजगवैरीमीनको, आपुसहितपरिवार ॥
त्योंतुलसीरघुनाथविन, आपदि शानिकार ६४
तुलसीरामभरोसशिर, लियेपापधरिमोट ॥
ज्योंव्यभिचारीनारिकहँ,बडीखसमकीओट६५॥
स्वामीसीतानाथजी, तुमलगिमेरीदौर ॥
तुलसीकागजहाजको, सूझतऔरनठौर ॥ ६६ ॥
तुलसीसबछलछांडिकै, कीजैरामसनेह ॥
अन्तरपतिसोहैकहा, जिनदेखीसबदेह ॥ ६७ ॥
सबहीकोपरखेलखे, बहुतकहैकाहोय ॥
तुलसीतेरोरामतजि, हितजगऔरनकोय॥ ६८॥
तुलसीहमसोंरामसों, भलोमिलोहैसूत ॥
छांड़ेबनैनसँगरहे, ज्योंघरमाहँकपूत ॥ ६९ ॥

कोटिविघ्नशंकटविकट, कोटिशत्रुजोसाथ ॥
तुलसीबलनहिंकरिसकैं, जोसुदृष्टरघुनाथ ॥७०॥
लग्नमुहूरतयोगबल, तुलसीगनतनकाहि ॥
रामभयेजेहिदाहिने, सबैदाहिनेताहि ॥ ७१ ॥
प्रभुप्रभुताजाकहँदई, बोलसहितगहिबाँह ॥
तुलसीतेगाजतफिरहिं, रामछत्रकीछांह ॥ ७२ ॥
साधनसांसतिसबसहत, सुमनसुखदफललाहु ॥
तुलसीचातकजलदकी,रीझिबूझिबुधकाहु॥७३॥
चातकजीवनजलदकहँ, जानतसमयसुरीति ॥
लखतलखतलखिपरतहै, तुलसीप्रेमप्रतीति ७४॥
जीवचराचरजहँलगे, हैसबकोप्रियमेह ॥
तुलसीचातकमनबसो, घनसोंसहजसनेह॥७५॥
डोलतबिपुलविहंगबन, पियतपोखरीबारि ॥
सुयशधवलचातकनवल,तोरभुवनदशचारि ७६॥
मुखमीठेमानसमलिन, कोकिलमोरचकोर ॥
सुयशललितचातकवलित, रहोभुवनभरितोर७७

माँगतडोलतहैनहीं, तजिघरअनतनजात ॥
तुलसीचातकभक्तकी, उपमादेतलजात ॥ ७८
तुलसीतीनोंलोकमहँ, चातकहीकोसाथ ॥
सुनियतजासुनदीनता, कियेदूसरेनाथ ॥ ७९
प्रीतिपपीहापयदकी, प्रकटनईपहिचान ॥
याचकजगतअधीनइन, कियेकनौड़ोदान॥८०।
ऊँचीजातपपीहरा, नीचोपियतननीर ॥
कैयांचैघनश्यामसों, कैदुखसहैशरीर ॥ ८१ ।
कैबरषैघनसमयशिर, कैभरिजन्मनिराश॥
तुलसीचातकयाचकहिं, तऊतिहारीआश ८२।
चढ़तनचातकचितकबहुँ, प्रियपयोदकेदोष ॥
यातेप्रेमपयोधिबर, तुलसीयोगनदोष ॥८३।
तुलसीचातकमांगनो, एकएकघनदानि ॥
देतसोभूभाजनभरत, लेतघूंटभरिपानि ॥ ८४ ।
हैअधीनयाचत नहीं, शीशनायनहिंलेय ॥
ऐसेमानीमांगनहिं, कोबारिदबिनदेय ॥ ८५ ।

पविपाहनदामिनिगरज,अतिझकोरखरखीझि ॥
दोषनप्रीतमरोषलखि, तुलसीरागहिरीझि॥८६॥
कोनजियायेजगतमहँ, जीवनदायकपानि ॥
भयोकनौड़ोचातकहिं,पयदप्रेमपहिचानि॥८७।
मानराखिबोमांगिबो, पियसोंसहजसनेह ॥
तुलसीतीनोंतबफबै, जबचातकमनलेह ॥ ८८॥
तुलसीचातकहीफबै, मानराखिबोप्रेम ॥
वक्रबूंदलखिस्वातिको, निदरिनिबाहतनेम ८९
उपलबरसिगर्जततरजि, डारतकुलिशकठोर ॥
चितवकिचातकजलदतजिकबहुँआनकीओर ९०
बरषिपरुषपाहनजलद, पक्षकरैटुकटूक ॥
तुलसीतदपिनचाहिये, चतुरचातकहिचूक ९१॥
रटतरटतरसनालटी, तृषासूखिगोअंग ॥
तुलसीचातककेहिये, नितनूतनहितरंग ॥ ९२ ॥
गंगायमुनासरस्वती, सातसिन्धुभरिपूर ॥
तुलसीचातककेमते, बिनस्वातीसबधूर ॥९३ ॥

तुलसीचातकके मते, स्वातीपियतनपानि ॥
प्रेमतृषाबढ़तीभली, घटैघटैगीकानि ॥ ९४ ।
सरसरिताचातकतजै, स्वातीसुधिनहिंलेइ ॥
तुलसीसेवकवशकहा, जोसाहबनहिंदेइ ॥९५।
आशपपीहापयदकी, सुनुहोतुलसीदास ॥
जोअँचवैजलस्वातिको, परिहरिबारहमास ९६
चातकघनतजिदूसरे, जियतननाईनारि ॥
मरतनमांगेअर्द्धजल, सुरसरिहूकोवारि ॥ ९७ ।
व्याधाबधोपपीहरा, परोगंगजलजाय ॥
चोंचमूँदिपीवैनहीं, धिगपियनोप्रणजाय ॥९८
वधिकबधोपरिपुण्यजल, उपरउठाईचोंच ॥
तुलसीचातकप्रेमपट, मरतनलायोखोंच ॥९९
चातकसुतहिसिखावनित, आननीरजनिलेहु
येहमरेकुलकोधरम, एकस्वातिसोंनेहु ॥ १००
दरशनपरशनआनजल, विनुस्वातीसुनुतात
सुनतचेचुवाचितचुभो, समुझिनीतिबरबात १०

तुलसीसुतसेकहतहैं, चातकबारम्बार ॥
तातनतरपणकीजियो, विनाबारिधरबार॥१०२॥
बाजचंगुगतचातकहि, भईप्रेमकीपीर ॥
तुलसीपरवशहाड़मम, परिहैपुहुमीनीर ॥१०३॥
अण्डफोरिकियचेंचुवा, तुषापरोनीहार ॥
गहिचंगुलचातकचतुर, डारचोबारंबार ॥१०४॥
होयनचातकपातकी, जोवनदानिनमूढ ॥
तुलसीगतिप्रहलादकी, समुझिप्रेमपदगूढ़ १०५
तुलसीकेमतचातकहि, केवलप्रेमपियास ॥
पियतस्वातिजलजानजग, तावतबारहमास १०६
एकभरोसोएकबल, एकआशविश्वास ॥
स्वातिसलिलरघुनाथवर, चातकतुलसीदास १०७
आलबालमुक्ताहलनि, हियसनेहतरुमूल ॥
हेरुहेरुचितचातकहि, स्वातिसलिलअनुकूल १०८
रामप्रेमविनदूबरे, रामप्रेमसहपीन ॥
विशदसलिलसरवरबरन, जनतुलसीमनमीन १०९

आपबधिकवरवेषधारि, कहैकुरंगमराग ॥
तुलसीज्योंमृगमनमुरे, परैप्रेमपटदाग ॥११०॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासविरचितायां सप्तशतिकायां
प्रेमभक्तिनिर्देशः प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

द्वितीयःसर्गः ।

दोहा-खेलतबालकव्यालसँग,पावकमेलतहाथ॥
तुलसीशिशुपितुमातुइव, राखतसियरघुनाथ १॥
तुलसीकेवलरामपद, लागैसरलसनेह ॥
तौघरघटवनवाटमहँ, कतहुँरहैकिनदेह ॥ २ ॥
कैममताकरुरामपद, कैममताकरुहेल ॥
तुलसीदोमहँएकअब, खेलछांडिछलखेल ॥३॥
कैतोहिलागहिरामप्रिय; कैतुरामप्रियहोहि ॥
दुइमहँउचितसुगमसमुझि, तुलसीकरतबतोहि ४

रावणारिकेदाससँग, कायरचलहिंकुचाल ॥
खरदूषणमारीचसम, मूढ़भयेवशकाल ॥ ५ ॥
तुलसीपतिदरबारमहँ; कमीवस्तुकछुनाहिं ॥
कर्म्महीनकलपतफिरत, चूकचाकरीमाहिं ॥६॥
रामगरीबनेवाजहैं, राजदेतजनजानि ॥
तुलसीमनपरिहरतनहिं, घुरबिनियांकीबानि७॥
घरकीन्हेघरहोतहै; घरछांडेघरजाय ॥
तुलसीघरवनबीचही, रहोप्रेमपुरछाय ॥८॥
रामरामरटिबोभलो, तुलसीखातनखाय ॥
लरिकाईतेपैरिबो, धोखेबूडिनजाय ॥ ९ ॥
तुलसीविलम्बनकीजिये, भजिलीजैरघुवीर ॥
तनतरकशतेजातहै, श्वाससारसातीर ॥१०॥
रामनाम सुमिरतसुयश, भाजनभयेकुजाति ॥
कुतरूकुसुरपुरराजबन, लहतभुवनविख्याति ११
नाममहातमसाखिसुनु, नरकीकेतिकबात ॥
सरवरपरगिरिवरतरे, ज्योतरुवरकेपात ॥ १२ ॥

ज्ञानगरीबीगुणधरम, नरमवचननिरमोष ॥
तुलसीकबहुँनछांडिये, शीलसत्यसंतोष ॥१३॥
अशनवसनसुतनारिसुख, पापिहुकेघरहोइ ॥
संतसमागमरामधन, तुलसीदुर्लभदोइ ॥ १४ ॥
तुलसीतीरहिकेबसे, अवशिपाइयेथाह ॥
वेगहिजायनपाइये, सरसरिताअवगाह ॥ १५ ॥
डगअन्तरमगअगमजल, जलनिधिजलसंचार ॥
तुलसीकरियाकर्मवश, बूडततरतनबार ॥१६ ॥
तुलसीहरिअपमानते, होतअकाजसमाज ॥
राजकरतरजमिलिगयो,सदलसकुलकुरुराज १७
तुलसीमीठेवचनते, सुखउपजतचहुँओर ॥
वशीकरणइकमंत्रहै, परिहरुवचनकठोर ॥१८॥
रामकृपातेहोतसुख, रामकृपाबिनजात ॥
जानतरघुवरभजनते, तुलसीशठअलसात १९॥
सन्मुखह्वैरघुनाथके, देहुसकलजगपीठि ॥
तजकेचूरीउरगकहँ, होतअधिकअतिदीठि २०॥

मर्यादादूरहिरहे, तुलसीकियेविचार ॥
निकटनिरादरहोतहै, जिमिसुरसरिवरवार २१॥
रामकृपानिधिस्वामिमम, सबविधिपूरणकाम ॥
परमारथपरधामवर, सन्तसुखदबलधाम॥२२ ॥
रामहिजानहिंरामरट, भजुरामहितजुकाम ॥
तुलसीरामअजाननर, किमिपावहिंपरधाम २३॥
तुलसीपतिरतिअंकसम, सकलसाधनासून ॥
अंकरहितकछुहाथनहिं, सहितअंकदशगून २४॥
तुलसीअपनेरामकहँ, भजनकरहुइकअंक ॥
आदिअन्तनिरबाहिबो, जैसेनवकोअंक ॥२५॥
दुगुनेतिगुनेचौगुने, पंचषष्ठऔसात ॥
आठौतेपुनिनवगुने, नवकेनवरहिजात ॥ २६ ॥
नवकेनवरहिजातहैं, तुलसीकियेविचार ॥
रमोरामइमिजगतमें, नहीं द्वैतविस्तार ॥ २७॥
तुलसीरामसनेहकरु, त्यागुसकलउपचारु ॥
जैसेघटतनअंकनव, नवकेलिखतपहारु ॥ २८ ॥

अंकअगुणआखरसगुण, समुझउउभयप्रकार
पोयेराखेआपभल, तुलसीचारुविचार ॥ २९
यहिविधितेसबराममय, समझहुसुमतिनिधान
यातेसकलविरोधतजु,भजुसबसमुझनआन ॥३
रामकामनाहीनपुनि, सकलकामकरतार ॥
याहीतेपरमातमा, अव्ययअमलउदार ॥ ३१
जोकछुचाहनसोकरत, हरतभरतगतभेद ॥
काहुसुखदकाहूदुखद, जानतहैंबुधवेद ॥ ३२
सन्तकमलमधुमासकर, तुलसीवरणविचार ॥
जगसरवरतरभरणकर, जानहुजलदातार ॥३३
एकसृष्टिमहँजाहिविधि, प्रकटतीनतरभेद ॥
सात्विकराजसतमसहित,जानतहैंबुधवेद ॥३४
ताविधिरघुवरनामकहँ, वर्त्तमानगुणतीन ॥
चन्द्रभानुअपिअमलविधि,हरिहरकहहिंप्रवीन३
अनलरकारअकाररवि, जानुमकारमयंक ॥
हरिआकाररकारविधि,मनमहेशनिःशंक ॥३६

बननज्ञानकहँदहनकर, अनलप्रचण्डरकार ॥
हरिआकारहरमोहतम,तुलसीकहहिंविचार ३७॥
त्रिविधतापहरशशिसतर, जानहुपरममकार ॥
विधिहरिहरगुणतीनिको,तुलसीनामअधार॥३८
भानुकृशानुमयंकको, कारणरघुवरनाम ॥
विधिहरिशम्भुशिरोमणी,प्रणतसकलसुखधाम३९
अगुणअनूपमसगुणनिधि, तुलसीजानतराम ॥
करतासकलजगत्तको,भरतासबमनकाम ॥४०॥
छत्रमुकुटसमविद्धिअल, तुलसीयुगलहलन्त ॥
सकलवर्णशिरपररहत,महिमाअमलअनन्त ॥४१
रामानुजसद्गुणविमल, श्यामरामअनुहार ॥
भरताभरतसोजगतको,तुलसीलसतअकार॥४२॥
राजतराजसतानुजब, वरधरणीधरधीर ॥
विधिविहरतअतिआसुकरि,तुलसीजनगणपीर४३
हरणकरणसंकटसतर, समरधीरबलधाम ॥
मामहेशअरिदवनवर,लषणअनुजअरिकाम॥४४

रामसदासमशीलघर, सुखसागरपरधाम ॥
अजकारणअद्वैतनित, समतरपदअभिराम ॥ ४५ ॥
होनहारसहजानसब, विभवबीचनहिंहोत ॥
गगनगिरहकारिबोकबै, तुलसीपढतकपोत ॥ ४६ ॥
तुलसीहोतसिखेनहित, तनगुणदूषणधाम ॥
भषणसिखिनकवनेकह्यो, प्रकटविलोकहुकाम ४७
गिरतअण्डसम्पुटअरुण, जलजपक्षअनयास ॥
अललसुवनउपदेशकेहि, जातसुउलटिअकास ४८
विविधचित्रजलपत्रबिच, अधिकनूनसमसूर ॥
कबकौनेतुलसीरचै, केविधिपक्षमयूर ॥ ४९ ॥
काकसुतागृहनाकरे, यह अचरजबड़बाय ॥
तुलसीकहिउपदेशमुनि, जनितपिताघरजाय ५०
सुपथकुपथलीन्हेंजनित, स्वस्वभावअनुसार ॥
तुलसीसिखवतनाहिंशिशु, मूककहननमजार ५१
तुलसीजानतहैसकल, चैतनमिलतअचेत ॥
कीटजातउड़ितियनिकट, बिनहिंपढ़ेरतिदेत ॥ ५२

होनहारसबआपुते, वृथाशोचकरजौन ॥
कंजभृंगतुलसीमृगन,कहहुअमेटतकौन ॥ ५३ ॥
सुखचाहतसुखमेंबसत,हैसुखरूपविशाल ॥
सन्ततजाविधिमानसर, कबहुँनतजतमराल ५४॥
नीतिप्रीतियशअयशगति,सबकहँशुभपहिचान ॥
वस्तीहस्तीहस्तिनी,देतनपतिरतिदान ॥ ५५ ॥
तुलसीअपनेदुखदते, कोकहुरहतअजान ॥
कीशकुंतअंकुरबनहिं,उपजतकरतनिदान ॥५६ ॥
यथाधरणिसबबीजमें, नखतअकाशनिवास ॥
तथारामसबधर्म्ममय, जानततुलसीदास ॥५७॥
पुहुमीपानीपावकहु, पवनहुमाहँसमात ॥
ताकहँजानतरामअपि,बिनुगुरुकिमिलखिजात ॥
अगुणब्रह्मतुलसीसोई, सगुणविलोकतसोइ ॥
दुखसुखनानाभाँतिको,तेहिविरोधतेहोइ ॥ ५९॥
शूरयथागणजीतिअरि,पलटिआवचलिगेह ॥
तिमिगतिजानहिरामकी,तुलसीसंतसनेह ॥६०॥

परमातमपद्रामपुनि, तीजेसंतसुजान ॥
जेजगमहँविचरहिंधरे, देहविगतअभिमान ॥६१॥
चौथीसंज्ञाजीवकी, सदारहतरतकाम ॥
ब्रह्मणसेतनरामपद, निशिवासरवशबाम ॥ ६२॥
सुखपायेहर्षतहँसत, खीझतलहेविशाद ॥
प्रकटतदुरतनिरयपरत, केवलरतविषखाद ॥६३॥
नानाविधिकीकल्पना, नानाविधिकोसोग ॥
सूक्षमऔस्थूलतन, कबहुँतजतनहिंरोग ॥ ६४ ॥
जैसेकुष्ठीकीसदा, गलितरहतदोउदेह ॥
बिन्दहुकीगवितैसिये, अन्तरहूगतिएह ॥ ६५ ॥
त्रिधादेहगतिएकविधि, कबहूँनागतिआन ॥
विविधकष्टपावतसदा, निरखहिंसन्तसुजान६६॥
रामहिंजानेसंतवर, संतहिंरामप्रमान ॥
संतनकेवलरामप्रभु, रामहिंसंतनआन ॥ ६७ ॥
तातेसंतदयालुवर, देहिंरामधनरीति ॥
तुलसीयहजियजानिकै, करियबहठिअतिप्रीति ॥

तुलसीसंतसुअम्बतरु फूलिफरहिंफरहेतु ॥
इततेवैपाहनहन, उततेवैफलदेतु ॥ ६९ ॥
दुखसुखदोनोंएकसम, संतनकेमनमाहिं ॥
मेरुउदधिगतिझकुरजिमि, भारभीजिगोनाहिं७०
तुलसीरामसुजानको, रामजनावैसोइ ॥
रामहिजानैरामजन, आनकबहुँनाहोइ ॥ ७१ ॥
सोगुरुरामसुजासुसम, नहींविषमतालेश ॥
ताकीकृपाकटाक्षते, रहेनकठिनकलेश ॥ ७२ ॥
गुरुकहतबसमझैसुनै, निजकरतबकरभोग ॥
कहतबगुरुकरतबकरै, मिटैसकलभवसोग॥७३॥
शरणागततेहिरामके, जिन्हहियधीसियरूप ॥
जापदनीघरउदयभय, नाशैभ्रमतमकूप ॥ ७४ ॥
जापदपायेपाइये, आनँदपदउपदेश ॥
संशयशमननशायसब,पावैपुनिनकलेश ॥७५॥
मेघासीतासमसमुझ, गुरुविवेकसमराम ॥
तुलसीसियसमसोसदा,भयोविगतमगवाम ७६॥

आदिमध्यअवसानगति, तुलसीएकसमान ॥
तेईसन्तस्वरूपशुभ, जेअनीतगतिआन ॥७७॥
एईशुद्धउपासना, पराभक्तिकीरीति ॥
तुलसीयहिमगपगुधरे, रहेरामपदप्रीति ॥ ७८ ॥
तुलसीविनगुरुदेवके, किमिजानैकहुकोय ॥
जहँतेजोआयोसोहै, जायजहां हैसोय ॥ ७९ ॥
अपगतयेसोईअवनि, सोपुनिप्रकटपताल ॥
कहांजनमअपिमरणअपि,समुझहिसुमतिरसाल॥
संगदोषतेभेदअस, मधुमदिरामकरन्द ॥
गुरुगमतेदेखहिंप्रकट, पूरणपरमानन्द ॥ ८१ ॥
डाबरसागरकूपगत, भेददिखाईदेत ॥
हैएकैदूजैनहीं, द्वैतआनकेहेत ॥ ८२ ॥
गुणगतनानाभाँतितेहि, प्रकटतकालहिपाय ॥
जानजायगुरुज्ञानते,बिनजानेभरमाय ॥ ८३ ॥
तुलसीतरुफूलतफलत, जाविधिकालहिपाय ॥
तैसेहीगुणदोषते, प्रकटतसमयसुभाय ॥ ८४ ॥

दोषहुगुणकीरीतियह, जानुअनलगतिदेखि ॥
तुलसीजानतसोसदा, जेहिविवेकसुविशेषि८५॥
गुरुतेआवतज्ञानउर, नाशतसकलविकार ॥
यथानिलयगतिदीपकै,मिटतसकलअँधियार८६
यद्यपिअवनिअनेकसुख, तोयतासुरसताल ॥
सन्ततुलसीमानसर, तदपिनतजहिंमराल ८७॥
तुलसीतोरततीरतरु, मानसजहँसविडार ॥
विगतनलिनिअलिमलिनजल,सरसरिहूबढ़िआर
जोजलजीवनजगतको, परसतपावनजौन ॥
तुलसीसोनीचेढरत, ताहिनिवारतकौन ॥८९ ॥
जोकरताहैकरमको, सोभोगतनहिंआन ॥
बवनहारलुनिहैसोई, देनीलहैनिदान ॥ ९० ॥
रावणरावणकोहन्यो,दोषरामकहँनाहिं ॥
निजहितअनहितदेखुकिन,तुलसीआपहिमाहिं ॥
सुमिरुरामभजुरामपद, देखुरामसुनुराम ॥
तुलसीसमुझहुरामकहँ,अहनिशइहतवकाम ९२॥

रजअपअनलअनिलनभ, जड़जानतसबकोइ ॥
इहचैतन्यसदासमुझ, कारजरतदुखहोइ ॥ ९३ ॥
निजकृतबिलसतसोसदा, बिनपायेउपदेश ॥
गुरुपगुपायसुमयधरै, तुलसीहरैकलेश ॥ ९४ ॥
सलिलशुक्रशोणितसमुझु, पलअरुअस्थिसमेत॥
बालकुमारयुवाजरा, हैसुसमुझुकरचेत॥ ९५ ॥
ऐसिहिगतिअवसानकी, तुलसीजानतहेत ॥
तातेयहगतिजानिजिय अविरलहरिचितचेत९६।
जानैरामस्वरूपजब, तबपावैपदसन्त ॥
जन्ममरणपदतेरहित, सुखमाअमलअनन्त ९७॥
दुखदायकजानेभले, सुखदायकभजिराम ॥
अबहमकोसंसारको, सबविधिपूरणकाम॥९८ ॥
आपुहिमदकोपानकरि, आपुहिहोतअचेत ॥
तुलसीविविधिप्रकारको, दुखउतपतियहिहेत ९९
जासोकरतविरोधहठि, कहुतुलसीकोआन ॥
सोतैंशमननआनतव, नाहककहोसिमलान १००॥

चाहसिसुखजेहिमारिकै, सोतौमारिनजाय ॥
कौनलाभविषतेबदलि, तेतुलसीविषखाय १०१
कोहद्रोहअघमूलहै, जानतकोकहुनाहिं ॥
दयाधर्म्मकारणसमुझि, कोदुखपावततांहिं १०२
बनोबनायोरहैसदा, समुझरहितनहिंशूल ॥
अरुणवरणकेहिकामको, बासविनाकोफूल १०३॥

इतिश्रीमद्गोस्वामितुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायामुपासनपराभक्तिनिर्देशोनामद्वितीयःसर्गः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः ।

दोहा-जनकसुतादशयानसुत, डरगईशअमजौरि ॥
तुलसिदासदशपदपरखि, भवसागरगयोपौरि १॥
तुलसीतेरोरोगखर, तातमातगुरुदेव ॥
तातजितोहींउचितअब, रुचितआनपदसेव ॥२॥
तर्कविशेषिनिषेधपति, उरमानसुसुपुनीत ॥
बसतमराललरहितकरि, तेहिभजुपलटिविनीत ३

शुक्रादिहिकलेदेहुइक, अन्तसहितसुखधाम ॥
इकमलाकलअन्तको, मध्यसकलसुखदाम॥४॥
बीजयमंत्रयरविसहित, तुलसीतथामयंक ॥
प्रकटतहाँनहिंतमतमी,समचितरहतअशंक ॥५॥
रंजनकाननकोकनद, वंशविमलअवतंस ॥
गंजनपुरहुतआरिसदल, जगहितमानसहंस ॥६॥
जगतेरहुछत्तीसहै, रामचरणछत्तीन ॥
तुलसीदेखुविचारिहिय, हैयहमतोप्रवीन ॥७॥
कन्दिगदूबनक्षत्रहनि, गनीअनुजतेहिकीन्ह ॥
जेहिहरिकरमनिमानहनि, तुलसीतेहिपदलीन्ह८
शिलाआयुमोचकवरण, हरणसकलजंजाल ॥
भरणकरणसुखसिद्धितर, तुलसीपरमकृपाल ९॥
मरणविपतिहरधरधरम; धराधरणबलधाम ॥
शरणतासुतुलसीचहत, वरणअखिलअभिराम १०
बिहगबीचरैयतत्रितय, पतिपतितुलसीतोर ॥
तासुविमुखसुखअतिविषम, सपनेहुहोतनभोर ११

द्वितियकोलराजिवप्रथम, बाहुननिश्चयसाहि ॥
आदिएककलदेभजहु, वेदविदितगुणनाहिं॥ १२॥
बसतजहाँराघवजलज, तेहिमितिगोजहिसंग ॥
भजुतुलसीतेहिअरिसुपद,करिउरप्रेमअभंग १३॥
भजहुतरणिअरिआदिकहँ,तुलसीआत्मजअन्त॥
पंचाननलहिपदममथि, गहेविमलमनसन्त १४॥
बिनिताशैलसुतासकी, तासुजनमकोठाम ॥
तेहिभजुतुलसीदासहित,प्रणतसकलसुखधाम १५
भजुपतंगसुतआदिकहँ, मृत्युंजयअरिअन्तु ॥
तुलसीपुहुकरयज्ञकर, वरणपाँसुमिच्छन्तु ॥ १६॥
उलटेतासीतासुपति, सोहजारमनसत्थ ॥
एकसूनरथतनयकहँ, भजसिनमनसमरत्थ १७॥
द्वितियतृतियहरकासनहिं,भजुतेहितुलसीदास ॥
काकासनआसनकियै, सासनलहेउपास ॥ १८॥
आदिद्वितियअवतारकहँ, भजुतुलसीनृपअन्त ॥
कमलप्रथमअरुमध्यसह, वेदविदितमतसन्त १९

जेहिनगन्थोकछुमानसहु, सुरपतिअरिमौआस॥
तेहिपदशुचिताअवधिभव,तहिभजुतुलसीदास२०
नैनकरणगुणधरणवर, तावरवरणविचार ॥
चरणसतरतुलसीचहसि, उबरणशरणअधार२१॥
भजुहरिआदिहिबाटिका, भरिताराजिवअन्त ॥
करितापदविश्वासभव, सरितातरसितुरन्त २२॥
जड़मोहनवरणादिकहँ, सहचञ्चलचितचेत ॥
भजुतुलसीसंसारअहि, नहिंगहिकरतअचेत २३
मरणअधिपवारणवरण, दूसरअन्तअगार ॥
तुलसीइषुसहरागधर, तारणतरणअधार ॥२४॥
ज्योंउरविजचाहसिझटित, तौकरिघटितउपाय॥
सुमनसवरवरअरिचरण, सेवनसरलसुभाय २५॥
द्वितियपयोधरपरमधन, बागअन्तयुतसोय ॥
भजुतुलसीसंसारहित, यातेअधिकनकोय २६॥
पतिपयोधिपावनपवन, तुलसीकरहुविचार ॥
आदिद्वितियअरुअन्तयुत,तामततवनिरधार २७

हंसकपटरससहितगुण, अन्तआदिप्रथमन्त ॥
भजुतुलसीतजिवामगति,जेहिपदरतभगवन्त२८॥
कनासमुझिकवरणहरहु, अन्तआदियुततार ॥
श्रीकरतमहरवरणवर, तुलसीसरतउबार॥ २९ ॥
अंकदशारसआदियुत, पाण्डुसूनुसहअन्त ॥
जानिसुवनसेवकसतर, करिहैंकृपापरन्त ॥३०॥
झटितिसखाहिविचारिहिय, आदिवरणहरएक ॥
अन्तप्रथमस्वरदेभजहु, जाउरतत्त्वविवेक ॥३१॥
आदिचन्द्रचञ्चलसहित, भजुतुलसीतजुकाम ॥
अघगञ्जनरंजनसुजन, भवभञ्जनसुखधाम॥३२॥
विगतिदेहतनुजासुपति, पदरतिसहितसनेम ॥
यदिअतिमतिचाहसिसुगति,तदितुलसीकरुप्रेम ॥
करताशुचिसुरसरिसुता, शशिशारँगमहिजान ॥
आदिअन्तसहप्रथमयुत, तुलसीसमुझुनआन३४
गिरिजापतिकलआदिइक,हरिनक्षत्रयुधिजान ॥
आदिअन्तभजुअन्तपुनि, तुलसीशुचिमनमान॥

ऋतुपतिपदपुनिपदिकयुत, प्रथमआदिकरलेहु
अन्तहरणपदद्वितियमहँ, मध्यवरणसहनेहु ॥३६
वाहनशेषसुमधुपरव, भरतनगरयुतजान ॥
हरिभरिसरितविपर्य्यकारि,आदिमध्यअवसान३
तुलसीउडुगणकोवरण, वनजसहितदोउअन्त
ताकहँभजुसंशयशमन, रहितएककलअन्त ३८
वारिजवारिजवरणवर, वरणततुलसीदास ॥
आदिआदिभजुआदिपद, पायेपरमप्रकास॥३९
भजुतुलसीकुलिशान्तकहँ, सहअगारतजिकाम
सुखसागरनागरललित, बलीअलीपरधाम॥४०
चंचलसहितरुचंचला, अन्तअन्तयुतज्ञान ॥
सन्तशास्त्रसम्मतसमुझि,तुलसीकरुपरमान॥४१
आदिवसन्तइकारदै, आशयतासुविचार ॥
तुलसीतासुशरणपरे, कासुनभयोउबार ॥ ४२
धराधराधरवरणयुग, शरणहरणभवभार॥
करनसतरतरपरमपद, तुलसीपरमाधार ॥ ४३

वरणधनंजयसूनुपति, चरणशरणरतिनाहि ॥
तुलसीजगवंचकविहठि, कियेविधातातााहि ४४
तुलसीरजनीपूर्णिमा, हारसहितलखिलेहु ॥
आदिअन्तयुतजानिकहि, तुलतरसनलसनेहु ४५
भानुगोत्रतिमितासुपति, कारणअतिहितजाहि ॥
ज्ञानसुगतियुतसुखसदन,तुलसीमानतताहि॥४६ ।
भजुतुलसीऔघादिकहुँ, सहिततत्त्वयुतअन्त ॥
भवआयुजंयजासुबल, मनचलअचलकरन्त ४७
देतकहानृपकाजपर, लेतकहाइतराज ॥
अन्तआदियुतसहितभजु, जोचाहसिशुभकाज ४८
चन्द्रवर्णिभजुगुणसुहित, समुझिअन्तअनुराग ॥
तुलसीजोयहवनपरे, तौतवपूरणभाग ॥ ४९ ॥
जिनकेहरिबाहननहीं, दधिसुतसुतजेहिनाहिं ॥ ।
तुलसीतेनरतुच्छहैं, बिनासमीरउड़ाहिं ॥ ५० ॥
रविचंचलअरुब्रह्मद्रव, बीचसुवासुविचारि ॥
तुलसिदासआसनकरे,अवनिसुताउरधारि॥५१॥

बनबनिताहगकोपमा, युतकरुसहितविवेक ॥
अन्तआदितुलसीभजहु, परिहरिमनकरटेक॥९२
उर्वीअन्तहुआदियुत, कुलशोभीकमलाद ॥
कैविपर्य्यऐसेहिभजहु,तुलसीशमनविषाद॥९३॥
तौतोहिंकहँसबकोउसुखद, करहिकहातवपांच ॥
हरबतृतियवारिजवरण,तजबलीनसुनुसांच॥९४॥
तजहुसदाशुभआशअरि, भजुसुमनसअरिकाल॥
सजुमतईशअवन्तिका,तुलसीविमलविशाल ९५
एतवंतवरवरणयुग, सेतजगतसबजान ॥
चेतसहितसुमिरणकरत, हरतसकलअघखान९६
मैत्रीवरणयकारको, सहसरआदिविचारि॥
पंचवर्गगहियुतसहित,तुलसीताहिसँभारि॥९७॥
हलयममध्यसमानयुत, यातेअधिकनआन ॥
तुलसीताहिविसारिशठ,भरमतफिरतभुलान९८॥
कौनजातिसीतासती, कोदुखदायकबाम ॥
कोकहियेशशिकरदुखद, सुखदायककोराम ९९

कोशङ्करगुरुवागवर, शिवहरकोअभिमान ॥
करताकोअजजगतको, भरताकोहरिजान ॥६०॥
सरत्रेयसराजीवगुण, करुतेहिदृढपहिचान ॥
पंचपवर्गहियुतसहित, तुलसीताहिसमान ॥६१
होतहरषकापायधन, विपतितजेकाधाम॥
दुखदाकुमतिकुनारितर, अतिसुखदायकराम६२
वीरकवनसहमदनशर, धीरकवनरतराम ॥
कवनकूरहरिपदविमुख, कोकामीवशबाम॥६३॥
कारणकोकंजीवको, खंगुणकहैसबको ॥
जानतकोतुलसीकहत, सोपुनिआवनहोय॥६४॥
तुलसीवरणविकल्पको औचपत्रितियसमेत ॥
अबसमुझैजड़सरितनर, समुझैसाधुसचेत ॥६५॥
जासुआसुसरदेवको, अरुआसनहरुवाम ॥
सकलदुखदतुलसीतजहु, मध्यतासुसुखधाम६६॥
चंचलतियभजुप्रथमहरि, जोचाहसिपरधाम ॥
तुलसीकहहिसुजनसुनहु, यहीसयानपकाम६७॥

कुलिशधर्म्मयुतयुगअना, भजुतुलसीतजुकाम ॥
अशुभहरणसंशयशमन, सकलकलागुणधाम ६८॥
श्रीकरकोरघुनाथहर, अनयशकहसबकोय ॥
सुखदाकोजानतसुमति, तुलसीसमतादोय॥६९॥
वैरमूलहितहरवचन, प्रेममूलउपकार ॥
दोहासरलसनेहमें, तुलसीकरैविचार ॥ ७० ॥
प्रागकवनगुरुलघुजगत, तुलसीअवरनआन ॥
श्रेष्ठाकोहरिभक्तिसम, कोलघुलोभसमान ॥७१॥
वरणद्वितियनाशकनिरय, तुलसीअन्तरसार ॥
भजहुसकलश्रीकरसदन, जनपालकखलसार७२॥
चपश्रेयससस्वरतहित, यमयुतदुखदनआन ॥
तुलसीहलयुततेकुशल, अन्तिकारसहजान॥७३॥
तुलसीयमगणबोधबिन, कहुकिमिमिटैकलेश ॥
तातेसदगुरुशरणगह, जातेपदउपदेश ॥ ७४ ॥
भगणजगणकासोंकरसि, रामअयननहिंकोय ॥
तुलसीपतिपहिचानविन, कोउतुलकबहुँनहोय७५

तुलसीतगणविहीननर, सदानगणकेबीच ॥
तिनहिंजगणकैसेलहै, परेसगणकेकीच ॥ ७६ ॥
इन्दरमणिसुरदेवऋषि, रुक्मिणिपतिशुभजान ॥
भोजनदुहिताकाकअलि, आनँदअशुभसमान७७
कोहितसन्तअहितकुटिल, नाशककोहितलोभ ॥
पोषकतोषकदुखदअरि,शोषकतुलसीक्षोभ॥७८॥
सदानगुणपदप्रीतिजेहि, जानुनगणसमताहि ॥
जगणताहिजययुतरहत, तुलसीसंशयनाहि॥७९॥
भगणभक्तिकरुभरमतजि, तगणसगणविधिहोय॥
सगणसुभायसमुझितजो, भजेनदूषणकोय॥८०॥
श्रीगजआसनजूतजू,विहरततीरसुधीर ॥
यज्ञपायमैंत्राणपद, राजतश्रीरघुवीर ॥ ८१ ॥
बाणधूतजूतटनिकट, विहरतरामसुजान ॥
तुलसीकरकमलनललित, लसतशरासनबान८२
मृदुमेचकशिररुहरुचिर, शीशतिलकभ्रूबंक ॥
धनुशरगहिजनुतहितयुत, तुलसीलसतमयंक८३॥

हंसकमलबिचवरणयुत, तुलसीअतिप्रियजाहि ।
तीनलोकमहँजोभजे, लहैतासुफलताहि ॥ ८४ ॥
आदिमहैअन्तहुमहै, मध्यरहैतेहिजान ॥
अनजानेजड़जीवसब,समुझैसन्तसुजान ॥८५॥
आदिदहैमध्येरहै, अन्तदहैसोबात ॥
रामविमुखकेहोतहै, रामभजेतेजात ॥ ८६ ॥
ललितचरणकटिकरललित, लसतललितबनमाल
ललितचिबुकद्विजअधरसह,लोचनललितविशाल
भरणहरणअक्षयअमल ,सहितविकलपविचार ॥
कहतुलसीमतिअनुहरत, दोहाअर्थअपार ॥८८॥
वशिष्ठादिलंकारमहँ, संकेतादिसुरीति ॥
कहबहुरिआगेकहब, समुझबसुमतिबिनीति८९॥
कोषअलंकृतसंधिगति,मैत्रीवरणविचार ॥
हरणभरणसुविभक्तिभल, कबिहिअर्थनिरधार९०
देशकालकरताकरम, बुधिविद्यागतिहीन ॥
तेसुरतरुतरदारदी, सुरसरितीरमलीन ॥ ९१ ॥

देशकालगतिहीनजे, करताकरमनज्ञान ॥
तेपिमर्थमगुपगुधरहिं, तुलसीश्वानसमान ॥९२॥
अधिकारीसबबोसरी, भलोजानिबोमन्द ॥
सुधासदनबसुबारहों, चौथीअथवाचन्द॥ ९३ ॥
नरवरनभसरवरसलिल, बिनयवनजविज्ञान ॥
सुमतिशुक्तिकाशारदा, स्वातीकहहिसुजान ९४॥
शमदमसमतादीनता, दानदयादिकरीति ॥
दोषदुरितहरदरदहर, खरविविमलविनीति॥९५॥
धरमधुरीणसुधीरधर, धारनबरपरपीर ॥
धराधराधरसमअचल, वचननविचलसुधीर९६॥
चौंतिसकेप्रस्तारमें, अर्थभेदपरमान ॥
कहहुसुजनतुलसीकहहिं, याविधितेपहिचान९७॥
वेदविषमकवरणसतर, सुतररामकीरीति ॥
तुलसीभरतनभरिहरत, भूलिहरहुजनिप्रीति॥९८॥
वनतेगुणकहँजानिये, तातेहगादिगतीन ॥
तुलसीयहजियसमुझिकरि, जगजितसत्तप्रवीन९९

चन्द्रअनलनहिंहैकहूँ, झूठोबिनाविवेक॥
तुलसीतेनरसमुझिहैं,जिनहिज्ञानरसएक॥१००॥
सतसैयातुलसीसतर, तमहरपरपरदेत॥
तुरितअविद्याजनदुरित,वरतुलसमकरिलेत१०१

इति श्रीमद्गोसाईंतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांसं-
केतवक्रोक्तिरामरसवर्णनोनामतृतीयःसर्गः॥३॥

चतुर्थः सर्गः।

दो०—त्रिविधभीतिकोशब्दवर,विघटनलटपरसान
कारणअविरलअलपियत, तुलसीअविधभुलान१
दिगभ्रमजाबिधहोतहै, कौनभुलावतताहि॥
जानिपरतगुरुज्ञानते, सबजगसंशयमाहि॥२॥
कारणचारिविचारुवर, वरणन अपरनआन॥
सदासोऽगुणदोषमें, लखिनपरतबिनज्ञान॥३॥
इहकरतबसबताहिको, यहितेयहपरमान॥
तुलसीमरमनपाइहौ, विनसद्गुरुवरदान॥४॥

दिगभ्रमकारणचारते, जानहिंसन्तसुजान ॥
ते कैसेलखिपाइहैं जेवहिविषमभुलान ॥ ५ ॥
सुखदुखकारणसोभयो, रसनाकोसुतवीर ॥
तुलसीसोतबलखिपरै, करैकृपावरधीर ॥ ६ ॥
अपनेखोदेकूपमहँ, गिरेयथादुखहोइ ॥
तुलसीसुखदसमुझिहिये,रचतजगतसबकोइ॥७॥
ताविधितेअपनोविभव, दुखसुखदेकरतार ॥
तुलसीकोउकोउसन्तवर,कीन्हेविरचिविचार॥८॥
रसनाहीकेसुतउपर, करतकरनतरप्रीति ॥
तेहिपाछेजगसबलगे, समुझनरीतिअरीति ॥९॥
मायामनजिउईशभणि, ब्रह्माविष्णुमहेश ॥
सुरदेवीऔब्रह्मलौं, रसनासुतउपदेश ॥ १० ॥
करणधारवारिधिअगम, कोगमकरैअपार ॥
जनतुलसीसतसंगबल, पायेविशदविचार॥ ११॥
गहिसुबेलविरलेसमुझि, बहिगेअपरहजार ॥
कोटिनबूडेखबरिनहिं,तुलसीकहहिंविचार॥१२॥

अवनसुनतदेखतनयन, तुलतनविविधविरोध ॥
कहहुकहीकेहिमानिये,केहिविधिकरियप्रबोध १३
श्रवणात्मकध्वन्यात्मक, वरणात्मकविधितीन ॥
त्रिविधशब्द अनुभवअगम, तुलसीकहहिंप्रवीन ॥
कहतसुनतआदिहिवरण, देखत वरणविहीन ॥
दृष्टिमानचरअचरगण, एकहिएकनलीन ॥ १५॥
पंचभेदचरगणविपुल, तुलसीकहहिंविचारि ॥
नरपशुस्वेदजखगकृमी, बुधजनमतनिरधारि १६
अतिविरोधतिनमहँप्रचल, प्रकटपरतनहिचान ॥
अस्थावरगतिअपरनहिं, तुलसीकहहिंप्रमान १७
रोमरोमब्रह्माण्डबहु, देखततुलसीदास ॥
बिनदेखेकैसेकोऊ, सुनिमानै विश्वास ॥ १८ ॥
वेदकहतजहँलगिजगत, तेहितेअलगनआन ॥
तेहिअधारव्यवहरतलखु,तुलसीपरमप्रमान १९॥
सरषपसूझतजासुकहँ,ताहिसुमेरुअसूझ ॥
कहेउनसमुझतसोअबुध,तुलसीविगतबिसूझ २०॥

कहतअवरसमुझतअवर, गहततजतकछु और ॥
कहेउसुनैसमुझतनहीं, तुलसीअतिमतिबौर२१ ॥
खोकरैअदेखइव, अनदेखोविश्वास ॥
कठिनप्रबलतामोहकी, जलकहँपरमपियास२२॥
सोईसेमरसोइसुवा, सेवतपाइबसन्त ॥
तुलसीमहिमामोहकी, विदितबखानतसन्त २३॥
सुन्योसबनदेख्योनयन, संशयशमनसमान ॥
तुलसीसमताअसमभव, कहतआनकहआन२४॥
सहाभवअरिहितअहित, सोपिनसमुझतहीन ॥
तुलसीदीनमलीनमति, मानतपरमप्रबीन॥२५॥
अटकतपदअद्वैतता, अटकतज्ञानगुमान ॥
अटकतवितरनतेविहटि,फटकततिषुअभिमान२६
सोचाहततेहिबिनुदुखित,सुखितरहिततेहिहोइ ॥
तुलसीसोअतिशयअगम, सुगमरामतेसोइ॥२७॥
मातपितानिजबालकहि, करहिंइष्टउपदेश ॥
सुनिमानेविधि आपजेहि, निजशिरसहेकलेश२८

सबसोंभलोमनाइबो, भलोहोनकीआस ॥
कस्तगगनकेगेंडुआ, सोशठतुलसीदास ॥२९

विलिमिसुदेखतदेवता, करणीसमतादेव ॥
मुयेमारअविचाररत, स्वारथसाधकएव ॥ ३०

बिनहिंबीजतरुएकभव ,शाखादलफलफूल ॥
कोवरणैअतिशयअमित,सबविधिअकलअतूल

शुकपिकमुनिगणबुधविबुध,फलआश्रितअति
तुलसी तेसबबिरदहित,सोतरुतासुअधीन॥३

कोनहिंसेवतआयभव, कोनसेयपछताय ॥
तुलसीवादहिपचतहै, आपहिआपनशाय॥३

कहतविविधफलविमलतेहि, बहतनएकप्रमान
भरमप्रतिष्ठामानिमन, तुलसीकथतमुलान३

मृगजलघटभरिविविधविधि,सींचतनभतरुमू
तुलसीमनहरषितरहत,बिनहिंलहेफलफूल॥३

सोपिकहहिंहमकहँलह्यो, नभतरुकोफलफूल
तेतुलसीतिनतेविमल,सुनिमानहिंमुदमूल॥३

तेपितिन्हैंयांचहिंविनय, करिकरिबारहजार ॥
तुलसीगाडरकीढरन, जानेजगतविचार ॥ ३७ ॥
शशिकरसँगरचनाकिये,कतशोभासरसात ॥
स्वर्गसुमनअबसन्तखलु,चाहतअचरजबात॥३८
तुलसीबोलनबूझई,देखतदेखनजोय ॥
तिनशठकेउपदेशका,करबसयानेकोय ॥ ३९ ॥
जोनसुनैंतेहिकाकहिय,कहासुनाइयताहि ॥
तुलसीतेहिउपदेशही,तासुसरिसमतिजाहि॥४०॥
कहतसकलघटराममय;तौखोजतकेहिकाज ॥
तुलसीकहइहकुमतिसुनि,उरआवतअतिलाज४१
अलखकहहिंदेखनचहहिं, ऐसेपरमप्रबीन ॥
तुलसीजगउपदेशही,बनिबुधअबुधमलीन॥४२॥
हहरतहारतरहितविद,गहतधरेअभिमान ॥
तेतुलसीगुरुआवनहिं,कहिइतिहासपुरान ॥४३॥
निजनैननदीसतनहीं,गहीआंधरेबांह ॥
कहतमोहवशतेहिअधम,परमहमारेनाह ॥ ४४ ॥

गगनवाटिकासींचहीं,भरिभरिसिन्धुतरङ्ग ॥
तुलसीमानहिंमोदमन,ऐसेअधमअमङ्ग ॥ ४५ ॥
दृषदकरतरचनाबिहारि,रङ्गरूपसमतूल ॥
विहगवदनविष्ठाकरे,तातेभयोनतूल ॥ ४६ ॥
चाहतिहारोआपते,माननआननआन ॥
तुलसीकरुपहिचानपति,यातेअधिकनआन॥४७
आतमबोधविचारइह,तुलसीकरुउपकार ॥
कोउकोउरामप्रसादते,पावतपरमतपार ॥ ४८ ॥
जहाँतोषतहँरामहैं,रामतोषनहिंभेद ॥
तुलसीदेखिगहतनहीं,सहतविविधविधिखेद४९।
गोधनगजधनवाजिधन, औररतनधनखान ॥
जबआवैसन्तोषधन,सबधनधूरिसमान ॥ ५०।
कुथिरतिअटतविमूढ़लटे, घटउदघटतनखान ।
तुलसीरटतहटतेनहीं,अतिशयगतिअभिमान ५१
भूभुवतुगतदामभुव; कामनविविधविधान ॥
तोतनवर्त्ततमानयत,तततुलसीपरमान ॥ ५२ ।

भोउरसुक्तिविभवपढिक, मनगतप्रकटलखात ॥
मनभोउरअपिसुक्तिते, विलगविजानबतात॥५३॥
रामचरणपहिचानबिनु, मिटीनमनकीदौर ॥
जन्मगँवायेबादही, रटतपरायेपौर ॥ ५४ ॥
सुनैवरणमानैवरण, वरणविलगनहिंज्ञान ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादबल, परैवरणपहिंचान ॥५५॥
विटपवेलिगणबागके,मालाकारनजान ॥
तुलसीताविधिविदविना,करतारामभुलान ५६॥
करतुबहीसोंकर्महै,कहतुलसीपरमान ॥
करणहारकरतारसो, भोगैकर्मनिदान ॥५७॥
तुलसीलटपदतेभटक, अटकअपितनहिंज्ञान ॥
तातेगुरुउपदेशबिनु,भरमतफिरतभुलान ॥५८ ॥
ज्योंबरदाबतिजारके,फिरतघनेरेदेश ॥
खांडभरेभुसखातहैं, बिनगुरुकेउपदेश ॥ ५९ ॥
बुध्वावैरनअयनपद, श्वपिनपदारथलीन ॥
तुलसीतेहिरासभसरिस, निजमनगणहिंप्रवीन६०

कहतविविधदेखेविना,गहतअनेकनएक ॥
तेतुलसीसोनहिंसरिस,वाणीवदहिंअनेक ॥ ६१॥
विनुपायेपरतीतअति, करतयथारथहेत ॥
तुलसीअबुधअकाशइव,भरिभरितुठीलेत॥६२॥
वसनबारिवांधतबिहठि, तुलसीकौनविचार ॥
हानिलाभविधिबाँधबिन,होतनहींनिरधार ६३॥
कामक्रोधमदलोभकी,जबलगमनमेंखान ॥
कापण्डितकामूरख,दोनोंएकसमान ॥ ६४॥
इतकुलकीकरणीतजे,उतनभजेभगवान ॥
तुलसीअधवरकेभय,ज्योंवधूरकोपान ॥ ६५ ॥
कीरसरिसवाणीपढ़त,चाखनचाहतखांड़॥
मनराखतवैरागमहँ,घरमोंराखतरांड ॥ ६६॥
रामचरणपरचैनहीं,बिनसाधनपदनेह ॥
मूड़मुड़ायेवादहीं,भांड़भयेतजिगेह ॥ ६७ ॥
काहभयोबनबनफिरे,जोबनिआयोनाहिं ॥
बनतेबनतेबनिगयो, तुलसीघरहीमाहिं ॥ ६८॥

जोगतिजानैंवरणकी,तनुगतिसोअनुमान ॥
वरणविन्दुकारणयथा,तथाजानुनहिंआन॥६९॥
परणयोगभवनामजग, जानुभरमकोमूल ॥
तुलसीकरताहैतुही,जानुमानुजनिभूल ॥ ७० ॥
नामजगतसमसमुझजग, वस्तुनकरिचितवैन ॥
बिन्दुगयेजिमिगैनते, रहतऐनकोऐन ॥ ७१ ॥
आपुहिऐनबिचारुविधि,सिद्धिविमलगतिमान॥
आनवासनाबिन्दुसम, तुलसीपरमप्रमान॥७२॥
धनधनकहेनहोतकोउ, समुझिदेखुधनमान॥
होतधनिकतुलसीकहत,दुखितनरहतजहान ॥७३
हिमकीमूरतिकेहिये, लगीनीरकीप्यास ॥
लगतशब्दगुरुतरनिकर, सोमैंरहीनआस ॥७४॥
जाकेउरवरवासना, भईभाषकछुआन ॥
तुलसीताहिविडम्बना,कहिविधिकथहिप्रमान७५
रुजतनुभवपरचैबिना, भेषजकरिकिमिकोय ॥
जानपरैभेषजकरै, सहजनाशरुजहोय ॥ ७६ ॥

मानसरुव्याधकुचाहतव, सद्गुरुवैदसमान ॥
जासुवचनअलबलअवश, होतसकलरुजहान ७७
रुचिबाढेसतसंगमहँ, नीतिक्षुधाअधिकाय ॥
होतज्ञानबलपीनअल,वृजिनविपतिमिटिजाय७८
शुक्लपक्षशशिस्वच्छभो, कृष्णपक्षद्युतिहीन ॥
बढ़बघटबविधिभांतिविचि,तुलसीकहहिंप्रवीन७९
सतसंगतिसितपक्षसम, असितअसन्तप्रसंग ॥
जानुआपकहँचन्द्रसम, तुलसीवदनअभंग ८० ॥
तीरथपतिसतसंगसम, भक्तिदेवसरिजान ॥
विधिउलटीगतिरामकी, तरणिसुताअनुमान८१॥
वरमेधामानहुगिरा, धीरधर्म्मन्यग्रोध ॥
मिलनत्रिवेणीमनहरणि, तुलसीतजहुविरोध ८२
समझबसबमज्जनविशद, मलअनीतगइधोय॥
अवशमिलनसंशयनहीं, सहजरामपदहोय ८३॥
क्षेमविमलवाराणसी, सुरअपगासमभक्ति ॥
ज्ञानविश्वेश्वरअतिविशद,लसतदयासहशक्ति ८४

सितक्षेमगृहजासुमन, वाराणसीनदूरि ॥
वेलसतिसुरसरिभक्तिजहँ,तुलसीनयकृतभूरि ८५
सितकाशीमगहरअसित, लोभमोहमदकाम ॥
निलाभतुलसीसमुझि, वासकरहुवसुयाम ८६॥
येपलटिआवेनहीं, हैसोकरुपहिचान ॥
ाजुजेइसोकालहै, तुलसीभरमनमान ॥८७ ॥
र्तमानआधीनदोउ, भावीभूतविचार ॥
लसीसंशयमननकरु, जोहैसोनिरुआर॥८८ ॥
नसउरवरममधुर, रामसुयशशुचिनीर ॥
उवृजिनबुधिविमलभइ,बुधिनहिंअगमअधीर८९
लंकारकविरीतियुत, भूषणदूषणरीति ॥
जातबरणतविविध,तुलसीविमलविनीति ९०
नैविचारसुहिंहता, सोपरागरसगन्ध॥
मादिकतेहिसरलसत, तुलसीघाटप्रबन्ध ९१॥
उमँगकवितावली, चलीसरितशुचिधार ॥
बगबरिमिलनहित,तुलसीहरषअपार॥९२ ॥

तरलतरंगसुछन्दवर, हरतद्वैततरुमूल ॥
वैदिकलौकिकविधिविमल, लसतविशदवरकू
सन्तसभाविमलानगरि, सिगरिसुमंगलखानि
तुलसीउरसुरसरिसुता, लसतसुथलअनुमानि९
मुक्तमुमुक्षूवरविषद, श्रोतात्रिविधप्रकार ॥
ग्रामनगरपुरयुगसुतट, तुलसीकहहिंविचार॥९८
वाराणसीविरागनहिं, शैलसुतामनहोय॥
तिमिअवधहिसरयुनतजै, कहतसुकविसबकोय९
कहबसुनबसमुझबपुनः, सुनिसमुझायबआन ॥
श्रमहरघाटप्रबन्धवर तुलसीपरमप्रमान ॥९७
इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसतशा
कायांआत्मबोधनिर्देशोनामचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

पञ्चमःसर्गः।

दो०-यतनअनूपमजासुवर, सकलकलागुणध
अविनाशीअव्ययहअमल, भोयहतनुधरिराम॥१

सदाप्रकाशसरूपवर, अस्तनअपरनआन ॥२॥
अप्रमेयअद्वैतअज, यातेदुरतनज्ञान ॥
जानहिंहंसारसमकहँ, तुलसीसन्तनआन ॥
जाकीकृपाकटाक्षते, पायेपदनिर्वान ॥ ३ ॥
तजतसलिलअपिपुनिगहत, घटतबढ़तनहिंरीति ॥
तुलसीयहगतिउरनिरखि, करियरामपदप्रीति ४
चुम्बकइरहनसेतिजिमि, संतनहरिसुखधाम ॥
जानतिरीक्षरसमसफरि, तुलसीजानतराम॥ ५॥
भरतहरतदरशतसबहिं, पुनिअदरशसबकाहु ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादवर, होतपरमपदलाहु ॥ ६ ॥
यथाप्रत्यक्षसरूपबहु, जानतहैसबकोय ॥
तथाहिलैगतिकोलखब, असमंजसअतिसोय ७
यथासकलअपिजातअप, रविमंडलकैमाहिं ॥
मिलततथाजिवरामपद, होततहाँलैनाहिं ॥ ८ ॥
कर्मकोषसँगलैगयो, तुलसीअपनीबानि॥
जहाँजायविलसैतहाँ, परैकहाँपहिचानि ॥ ९ ॥

ज्योंधरणीमहँहेतुसब, रहतयथाधारिदेह ॥
त्योंतुलसीलैराममहँ, मिलतकबहु नहिंएह॥ १० ॥
शोषकपोषकसमुझशुचि, रामप्रकाशसरूप ॥
यथातथाबिनुदेखिये, जिमिआदरशअनूप ११॥
कर्ममिटायेमिटतनहिं, तुलसीकियेबिचार॥
करतबहीकेफेरहै, याविधिसारअसार ॥ १२ ॥
एककियेहोदूसरो, बहुरितीसरोअंग ॥
तुलसीकैसेहुनानशै,अतिशयकर्मतरंग ॥ १३ ॥
इनदोउनतेरहतभो, कोउनरामतजिआन ॥
तुलसीयहगतिजानिहै,कोउकोउसंतसुजान १४
सन्तनकोलैअमिसदन, समुझहिसुगतिप्रवीन ॥
कर्मविपर्ययकबहुँनहिं, सदारामरसलीन ॥१५॥
सदाएकरससन्तसिय, निश्चयनिशिकरजान ॥
रामदिवाकरदुखहरण, तुलसीशीलनिधान१६ ।
सन्तनकीगतिउरविजा,जानहुशशिपरमान ॥
रमितरहतरसमेंसदा, तुलसीरतिनहिंआन ॥

ातरूपजिमिअनलमिलि; ललितहोततनताय ॥
न्तशीलकरसीयतिमि, लसहिरामपदपाय १८॥
ापुहिबांधतआपुहठि, कौनछुड़ावतताहि ॥
खदायकदेखतसुनत,तदपिसोमानतनाहि १९॥
ौनतारतेअधमगति, ऊर्द्धतौनगतिजात ॥
लसीमकरीतन्तुइव, कर्मनकबहुँनशात ॥२० ॥
हाँरहततहँसहसदा, तुलसीतेरीबानि ॥
धरैविधिवशहोयजब,सतसंगतिपहिचानि२१॥
ैरजनीसघरातथा, इहअस्थिरअसथूल ॥
ऋमगुणकोजीवकर, तुलसीसोतनमूल ॥२२ ॥
ावतअपरवितेयथा, जाततथारविमाहिं ॥
इँतेप्रकटेततहँदुरत, तुलसीजानतताहि ॥२३॥
कटेभयेदेखतसकल ,दुरतलखतकोइकोय ॥
ुलसीयहअतिशयअगम, बिनगुरुसुगमनहोय॥
जगजेनयहीननर, बरबसदुखमगजाहि ॥
टतदुरतमहादुखी, कहँलगिकहियतताहि २५

सुखदुखमगअपनेगहे, मगकेहुगहतनधाय ॥
तुलसीरामप्रसादविनु, सोकिमिजानोजाय२६
महितेरविरवितेअवनि, सपनेहुँदुखकहुँनाहिं
तुलसीतबलगिदुखितअति, शशिमगुलहतनतारि
सन्तनकीगतिशीतकर, लेशकलेशनहोय ॥
सोसियपदसुखदासदा, जानुपरमपदसोय॥ २८
तजतअमियशशिजानिजग, तुलसीदेखतरूप
गहतनहींसबकहँविदित,अतिशयअमलअनूप२
शशिकरसुखदसकलजगत, कोतेहिजानतनाहिं
कोककमलकरदुखदकर,तदपिदुखदनहिताहिं३
बिनदेखेसमुझेसुने, सोभौमिथ्यावाद ॥
तुलसीगुरुगमकैलखै, सहजैमिटैविषाद ॥ ३१
वरषिविश्वहर्षितकरत, हरततापअघप्यास ॥
तुलसीदोषनजलदकर, त्योंजड़करतजवास॥३२
चन्द्रदेतअमिलेतविष, देखहुमनहिंविचार ॥
तुलसीतिमिसियसन्तकर, महिमाविशदअपार३

रसमविदितरविरूपलखु, शीतशीतकरजान ॥
लसतयोगयशकारभव,तुलसीसमझसमान॥३१

लेतिअवनिरविअंशकहँ, देतिअमियअपसार
तुलसीसूक्षमकोसदा, रविरजनीशअधार॥ ३५

भूमिभानुअस्थूलअप, सकलचराचररूप ॥
तुलसीबिनगुरुनालहै,यहमतअमलअनूप ॥३६

तुलसीजेलयलीननर, तेनिशिकरतनलीन ॥
अपरसकलरविगतभये, महाकष्टअतिदीन॥३७

तुलसीकवनेहुँयोगते, सतसंगतिजबहोय ॥
राममिलनसंशयनहीं,कहहिंसुमतिसबकोय ३८

सेवकपदसुखकरसदा, दुखदसव्यपदजान ॥
यथाबिभीषणरावणहि,तुलसीसमुझप्रमान॥३९

शीतउष्णकररूपयुग, निशिदिनकरकरतार ॥
तुलसीतिनकहँएकनहिं, निरखहुकरिनिरधार४०

नहिंनैननकाहूलख्यो, धरतनामसबकोय ॥
तातेसांचोहैसमुझ, झूँठकबहुँनहिंहोय॥ ४१ ॥

वेदकहतसबकोउबिदित, तुलसीअमियस्वभाव।
करतपामअपिरुजहरत, अविरलअमलप्रभाव ४२
गन्धशीतअपिउष्णता, सबहिविहितजगजान।
महिवनअनलपुआनिलग; बिनदेखेपरमान ४३।
इनमहँचेतनअमलअल, बिलखततुलसीदास॥
सोपदगुरुउपदेशसुनि, सहजहोतपरकास॥ ४४॥
यहिविधितेबरबोधइह; गुरुप्रसादकोउपाव॥
हैतेअलतिहुँकालमहँ; तुलसीसहजप्रभाव॥४५॥
काकसुतासुतवासुता, मिलतजननिपितुधाय॥
आदिमध्यअवसानगत, चेतनसहजसुभाय ४६॥
समतास्वारथहीनते, होतसुविशदविवेक॥
तुलसीयहतिनहींफबै, जिनहिंअनेकनएक ४७॥
सबस्वारथस्वारथरटत, तुलसीघटतनएक॥
ज्ञानरहितअज्ञानरत, कठिनकुमनकरटेक ४८॥
स्वारथसोजानहुसदा, जासोंविपतिनशाय॥
तुलसीगुरुउपदेशविन, सोकिमिजानोंजाय ४९॥

कारजस्वारथहितकरै, कारणकरेनहोय ॥
मनवाऊषविशेषते, तुलसीसमुझहुसोय ॥५०॥
कारणकारजजानता, सबकाहूपरमान ॥
तुलसी कारजकारजो, सोतैंअपरनआन ॥५१॥
बिनकरताकारजनहीं, जानतहैंसबकोय ॥
अरुमुखश्रवणसुनतनहीं,प्राप्तिकवनविधिहोय५२
करताकारणकारजहु, तुलसीगुरुपरमान ॥
लोपतकरतामोहवश, ऐसोअबुधमलान ॥५३ ॥
अनिलसलिलविधियोगते, यथावीचिबहुहोय॥
करतकरावतनहिंकछुक, करताकारणसोय ५४॥
क्षेमधरणकरतारकर, तुलसीपतिपरधाम ॥
सोवरतरतासमनकोउ, सबविधिपूरणकाम ५५॥
करताकारणसारपद, आवैअमलअभेद ॥
कर्म्मघटतअपिबढ़तहैं, तुलसीजानतवेद ॥५६॥
स्वेदजजवनप्रकारते, आपुकरैकोउनाहिं ॥
भयेप्रकटतेहिकेसुनो, कौनविलोकतताहिं॥५७॥

भयोविषमताकर्ममहँ, समताकियेनहोय ॥
तुलसीसमतासमुझकर, सकलमानमदधोय ५८॥
समहितसहितसमस्तजग, सुहृदजानसबकाहु ॥
तुलसीयहमतधारुउर, दिनप्रतिअतिसुखलाहु५९
यहमनमहँनिश्चयधरहु, है कोउअपरनआान ॥
कासनकरतविरोघहठि, तुलसीसमुझप्रमान ६०॥
महिजलअनलसुअनिलनभ, तहाँप्रकटतवरूप ॥
जानिजायवरबोधते, अतिशुभअमलअनूप ६१॥
जोपैआकसमानते, उपजेबुद्धिविशाल ॥
नातोअतिछलहीनहै, गुरुसेवनकछुकाल ॥६२॥
कारजयुगजानहुहिये, नित्यअनित्यसमान ॥
गुरुगमतेदेखहिसुजन, कहतुलसीपरमान ॥६३॥
महिमयंकअहिनाथको, आदिज्ञानभोभेद ॥
ताविधितेईजीवकहँ, होतसमुझबिनखेद ॥ ६४ ॥
परोफेरनिजकर्ममहँ, भ्रमभवकायहहेत ॥
तुलसीकहतसुजनसुनहु, चेतनसमुझअचेत६५॥

नामकारदूषणनहीं, तुलसीकियेविचार ॥
कर्मनकीघटनासमुझि, ऐसेवरणउचार ॥ ६६
सुजनकुजनमहिगतयथा, तथाभानुशशिमाहिं
तुलसीजानतहोसुखी, होतसमुझबिननाहिं ६७
मातुतातभवरीतिजिमि, तिमितुलसीगतितोरि
मातनतातनजानुतब, हैतेहिसमुझबहोरि ॥६८
सर्वसकलतैंहैसदा, विश्लेषितसबठौर ॥
तुलसीजानहिसुहृदजे, तेअतिमतिशिरमौर ६९
अलंकारघटनाकुनक, रूपनामगुणतीन ॥
तुलसीरामप्रसादते, परखहिपरमप्रवीन ७०
एकपदारथविविधगुण, संज्ञाअगमअपार ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादते, पायेपदनिरधार ॥७१॥
गन्धनमूलउपाधिबहु, भूषणतनगणजान ॥
शोभागुणतुलसीकहहिं,समुझहिंसुमतिनिधान७२
जैसोजहाँउपाधितहँ, घटितपदारथरूप ॥
तैसोतहाँप्रभासमन, गुणगणसुमतिअनूप ॥७३।

जासुवस्तुअस्थिरसदा, मिटतमिटायेनाहिं ॥
रूपनामप्रकटतदुरत, समुझिविलोकहुताहिं ७४।
पेषरूपसंज्ञाकहब, गुणसुविवेकविचार ॥
इतनोईउपदेशवर, तुलसीकियेविचार ॥ ७५ ॥
सदासगुणसीतारमण, सुखसागरबलधाम ॥
जनतुलसीपरखेपरम, पायेपदविश्राम ॥ ७६ ॥
सगुणपदारथएकनित, निर्गुणअमितउपाधि ॥
तुलसीकहहिंविशेषते, समुझसुगतिसुठिसाधि ७७
यथाएकमहँवेदगुण, तामहँकोकहुनाहिं ॥
तुलसीवर्त्ततसकलहैं, समुझतकोउकोउताहिं ७८
तुलसीजानतसाधुजन, उदयअस्तगतभेद ॥
बिनजानेकैसेमिटै, विविधजननजनखेद ॥७९॥
संशयसोकसमूलरुज, देतअमितदुखताहि ॥
अहिअनुगतसपनेविविध, चाहिपरायणजाहि८०
तुलसीसाँचोशापहै, जबलगिसुलैंननैन ॥
सोतबलगिजबलागेनहीं, सुनैसुगुरुबरबैन॥८१॥

पूरणपरमारथदरश, परसतजौलागिआश ॥
तौलगिखनउत्थाननद, जबलगिजलनप्रकाश८२
तबलगिहमतेसबबड़ो, जबलगिहैकछुचाह ॥
चाहरहितकहकोअधिक, पायपरमपदथाह ८३॥
कारणकरताहैअचल, अपिअनादिअजरूप ॥
तातेकारजविपुलतर, तुलसीअमलअनूप॥८४॥
करताजानिनपरतहै, विनगुरुवरपरसाद ॥
तुलसीनिजसुखविधिरहित, केहिविधिमिटेविषाद
मृन्मयघटजानतजगत, बिनकुलालनहिंहोय ॥
तिमितुलसीकरतारहित.कर्मकरैकहुँकोय॥८६॥
तातेकरताज्ञानकर,जातेकर्मप्रधान ॥
तुलसीनालखिपाइहो,कियेअमितअनुमान ८७॥
अनूमानसाक्षीरहित, होतनहींपरमान ॥
कहतुलसीप्रत्यक्षजो, सोकहुअपरकोआन ८८॥
मितिकारणकरतासहित, कारजकियेअनेक ॥
जोकरताजानेनहीं, तोकहुकवनविवेक ॥ ८९ ॥

स्वर्णकारकरताकनक, कारणप्रकटलखाय ॥
अलंकारकारजसुखद, गुणशोभासरसाय ॥९०॥
चामीकरभूषणअमित, करताकहतबभेद ॥
तुलसीजेगुरुगमरहित, ताहिरमितअतिखेद ९१॥
तननिमित्तजहँजोभयो, तहाँसोइपरमान ॥
जिनजानेमानेतहाँ, तुलसीकहहिंसुजान ॥९२॥
मृन्मयभाजनविविधविधि, करतामनभवरूप ॥
तुलसीजानेतेसुखद, गुरुगमज्ञानअनूप ॥९३॥
सबदेखतमृणभाजनहिं, कोइकोइलखतकुलाल ॥
जाकेमनकेरूपवह ,भाजनविलखुविशाल ॥९४॥
एकैरूपकुलालको, माटीएकअनूप ॥
भाजनअमितविशाललघु, सोकरतामनरूप ९५
जहाँरहतवरततहाँ,तुलसीनित्यस्वरूप॥
भूतनभावीताहिकहँ,अतिशयअमलअनूप॥९६॥
श्वाससमीरप्रत्यक्षअप, स्वच्छादरशलखात ॥
तुलसीरामप्रसादबिन, अविगतिजानिनजात ॥

तुलसीतलरहिजातहै, युततनअचलउपाधि ॥
यहगतितेहिलखिपरतजेहि,भईसुमतिशुठिसाधि॥
करताकारणकालके, योगकरममतजान ॥
पुनःकालकरतादुरत, कारणरहतप्रमान ॥११॥

इति श्रीमद्गोसाईस्वामीतुलसीदासविरचितायांसप्तशति-
कायांकर्म्मसिद्धांतयोगोनामपंचमःसर्गः ॥५॥

षष्ठःसर्गः ।

दोहा–जलथलतनगतहैसदा, तैतुलसीतिहँकाल॥
जन्ममरणसमुझेविना, भाषतसमनविशाल॥१॥
तैतुलसीकरतासदा, कारणशब्दनआन ॥
कारणसंज्ञासुखदुखद, बिनगुरुतेहिकिमिजान ॥
कारजरतकरतासमुझ, दुखसुखभोगतसोय ॥
तुलसीश्रीगुरुदेवबिन, दुखप्रदद्दूरनहोय ॥ २ ॥
कारणशब्दस्वरूपमें, संज्ञागुणभवजान ॥
करतासुरगुरुतेसुखद, तुलसीअपरनआन ॥ ४॥

गन्धविभावरिनीररस, सलिलअनलगतज्ञान ॥
वायुवेगकहँबिनलखे, बुधजनकहहिंप्रमान ॥५॥
अनुस्वारअक्षररहित, जानतहैंसबकोय ॥
कहँतुलसीजहँलगिवरण,तासुरहितनहिंहोय॥६॥
आदिहुअन्तहुहैसोई, तुलसीऔरनआन ॥
बिनदेखेसमुझेविना, किमिकोइकरैप्रमान ॥७॥
रहितबिन्दुसबवरणते, रेफसहितसबजान ॥
तुलसीस्वरसंयोगते, होतवरणपदमान ॥ ८ ॥
अनुस्वारसूक्षमयथा, तथावरणअस्थूल ॥
जोसूक्षमअस्थूलसो, तुलसीकबहुँनभूल ॥ ९ ॥
अनिलअनलपुनिसलिलरज,तनगततनवतहोय॥
बहुरिसोरजगतजलअनल,मरुतसहितरविसोय ॥
औरभेदसिद्धान्तयह, निरखुसुमतिकरुसोय ॥
तुलसीसुतभवयोगबिन, पितुसंज्ञानहिंहोय ११॥
संज्ञाकहतबगुणसमुझ, सुनबशब्दपरमान ॥
देखबरूपविशेषहै, तुलसीवेषबखान ॥ १२ ॥

होतपितातेपुत्रजिमि, जानतकोकहुनाहिं ॥
जबलगिसुतपरसोनहीं, पितुपदलहैनताहिं १३।
तिमिवरणनसंज्ञाकरे, वरणवरणसंयोग ॥
तुलसीहोयनवरणकर,जबलगिवरणवियोग१४।
तुलसीदेखहुसकलकहँ, यहिविधिसुतआधीन।
पितुपदपरखिसुदृढ़भयो,कोउकोउपरमप्रवीन१५
जहँदेखोसुतपदसकल, भयौपितापदलोप ॥
तुलसीसोजानैसुई, जासुअमोलिकचोप ॥१६।
ख्यातभुवनतिहुँलोकमहँ, महाप्रबलअतिसोइ ॥
जोकोइतेहिपाछेकरै, सोपरआगेहोइ ॥ १७ ॥
तुलसीहोतनहींकछुक, रहितभुवनव्यवहार ॥
तोहींतेअग्रजभयो,सबविधितेहिपरचार ॥ १८।
भुवनदेखिभूलेसकल, भयअतिपरमअधीन ॥
तुलसीजेहिसमुझाइये,सोमनकरतमलीन ॥१९
मानतसोसांचोहिये, सुनतसुनावतवादि ॥
तुलसीतेसमुझतनहीं,जोपदअमलअनादि॥२०

जाहिकहतहैंसकलसो, जेहिकहतवसोऐन ॥
तुलसीताहिसमुझिहिये,अजहुँकरहुचितचैन॥२१
तुलसीजोहैसोनहीं,कहतआनसबकोय ॥
यहिविधिपरमविडम्बना,कहहुनकाकहँहोय२२॥
गुरुकरिबोसिद्धान्तयह, होययथारथबोध ॥
अनुचितउचितलखायउर,तुलसीमिटैविरोध २३
सतसंगतिकोफलयही, संशयलहैनलेश ॥
हैअस्थिरशुचिसरलचित,पावैपुनिनकलेश॥ २४
जोमरबोपदसबनको, जहँलगिसाधअसाध ॥
कवनहेतुउपदेशगुरु, सतसंगतिभवबाध ॥२५॥
जोभावीकछुहैनहीं, झूँठोगुरुसतसंग ॥
ऐसिकुमतितेझूठगुरु, सन्तनकोपरसंग ॥ २६ ॥
जौलैंलखिनाहींपरत, तुलसीपरपदआप ॥
तौलगिसीहिविवशसकल, कहतपुत्रकोबाप॥ २७
जहँलगिसंज्ञावरणभौ, जासुकहेतेहोय ॥
तोतुलसीसेहैसबल, आनकहाकहुहोय ॥ २८ ॥

अपनेनैननदेखिजे, चलहिंसुमतिवरलोग ॥
तिनहिंनविपतिविषादरुज,तुलसीसुमतिसुयोग ।
मृगागगनचरज्ञानबिन, करतनहींपहिचान ॥
परवशशठहठतजतसुख, तुलसीफिरतभुलान२०।
काहकहोतेहितोहिंके, जेहिउपदेशेउतात ॥
तुलसीकहतसोदुखसहत,समुझरहितहितबात २
बिनकाटेतरुवरयथा, मिटैकवनविधिछाँह ॥
त्योंतुलसीउपदेशबिन,निःसंशयकोउनाँह ॥२
अपनोकरतबआपलखि,सुनिगुनिआपविचार ।
तौतोहिंकहँदुखदाकहा,सुखदासुमतिअधार ॥२
ब्राह्मणवरविद्याविनय,सुरतिविवेकनिधान ॥
पथरतिअलथअतीतमति,सहितदयाश्रुतिमान ।
विनयछत्रशिरजासुके, प्रतिपदपरउपकार ॥
तुलसीसोक्षत्रीसही,रहितसकलव्यभिचार॥२५
वैशविनयमगपगधरै,हरैकटुकवरबैन ॥
सदयसदाशुचिसरलता,होयअचलसुखऐन २६।

शूद्रक्षुद्रपथपरिहरै,हृदयविप्रपदमान ॥
तुलसीमनसमतासुमति,सकलजीवसमजान॥ ३७
हेतुवरणवरशुचिरहनि, रसनिरासमुखसार ॥
चाहनकामसुरानरस,तुलसीसुदृढ़विचार ॥३८ ॥
यथालाभसन्तोषरत,गृहमगबनसगरीत ॥
सोतुलसीसुखमेंसदा,जिनतनुविभवविनीत ॥ ३९
रहैजहांविचरैतहां, कभीकहूँकछुनाहिं ॥
तुलसीतहँआनन्दसँग,जातयथासँगछाहिं॥ ४० ॥
करतकर्मजेहिकोसदा, सोभनदुखदातार ॥
तुलसीजोसमुझैमनहिं,तोतेहितजैविचार ॥४१॥
कहतसुनतसमुझतलखत, तेहितेविपतिनजाय ॥
तुलसीसबतेविलगहैं, जबतेनहिंठहराय ॥ ४२ ॥
सुनतकोटिकोटिनकहत, कौड़ीहाथनएक ॥
देखतसकलपुराणश्रुति,तापररहितविवेक॥ ४३ ॥
समुझतहैसन्तोषधन, यातेअधिकनआन ॥
गहतनहींतुलसीकहत, तातेअबुधमलान॥ ४४ ॥

कहाहोतदेखेकहे, सुनिसमुझेसबरीति ॥
तुलसीजबलगिहोतनहिं,सुखदरामपदप्रीति ॥४५
कोटिनसाधनकेकिये, अन्तरमलनहिंजाय ॥
तुलसीजौलगिसकलगुण,सहितनकर्मनशाय ४६
चाहबनीजबलगिसकल, तबलगिसाधनसार ॥
तामहँअमितकलेशकर, तुलसीदेखविचार ॥४७
चाहकियेदुखियासकल, ब्रह्मादिकसबकोय ॥
निश्चलतातुलसीकठिन, रामकृपावशहोय॥४८॥
अपनोकर्मनआपकहँ, भलोमन्दजेहिकाल ॥
तबजानबतुलसीभई, अतिशयबुद्धिविशाल ४९
तुलसीजबलगिलखिपरत, देहप्राणकोभेद ॥
तबलगिकैसेकैमिटै,करमजनितबहुखेद ॥ ५० ॥
जोइदेहसोइप्राणहै, प्राणदेहनहिंदोय ॥
तुलसीजोलखिपायहै,सोनिरदयनहिंहोय॥५१॥
तुलसीतेझूंठोभयो, कारेझूंठेसँगप्रीति ॥
हैसांचोहोसांचजब, गहैरामकीरीति ॥ ५२ ॥

झूँठीरचनासांचहै, रचतनहींअलसात ॥
बरजतहूझगरतबिहाठि; नेकनबूझतबात ॥ ५३॥
करमखरीकरमोहथल, अंकचराचरजाल ॥
हरतभरतभरहरगनत,जगतज्योतिषीकाल॥५४॥
कहनकालकिलसकलबुध, ताकरयहव्यवहार ॥
उत्पतिस्थितिलयहोतहै,सकलतासुअनुहार५५॥
अंकुरकिसलयदलविपुल, शाखायुतवरमूल ॥
फूलिफरतऋतुअनुहरत,तुलसीसकलसतूल ५६॥
कहतबकरतबसकलतेहि, ताहिरहतनहिंआन ॥
जाननमाननआनविधि,अनूमानअभिमान५७॥
हानिलाभजयविधिविजय, ज्ञानदानसनमान ॥
खानपानशुचिरुचिअशुचि,तुलसीविदितविधान
शालकपालकसमविषम, रमभमगमगतिज्ञान ॥
अटघटलटनटनादिजट, तुलसीरहितनजान५९॥
कठिनकरमकरणीकथन, करताकारककाम ॥
कायकष्टकारणकरम, होतकालसमशाम ॥६०॥

खबरआतमाबोधबर, खरबिनकबहुनहोय ॥
तुलसीखसमबिहीनजे, तेखरतरनहिंसोय॥ ६१ ॥
चितरतिवितव्यवहरितविधि,अगमसुगमजयनीच
धीरधरमधारणहरण, तुलसीपरतनबीच ॥ ६२ ॥
शब्दरूपविवरणविशद,तासुयोगभवनाम ॥
करतानृपबहुजातितेहि, संज्ञासबगुणधाम॥६३॥
नामजातिगुणदेखिकै, भयोप्रबलउरभर्म ॥
तुलसीगुरुउपदेशबिन, जानिसकैकोमर्म॥ ६४॥
अपनकर्मवरमानिकै, आपबँधोसबकोय ॥
कारजरतकरताभयो,आपनसमुझतसोय ॥६५ ॥
कोकरताकारणलखै, कारजअगमप्रभाव ॥
जोजहँसोतहँतरहरष, तुलसीसहजसुभाव ॥६६॥
तुलसीबिनगुरुकोलखे,वर्त्तमानविधिरीति ॥
कहुकेहिकारणतेभयो,सूर्यउष्णशशिशीत ॥६७॥
करताकारणकर्मते, परपरआतमज्ञान ॥
होतनबिनउपदेशगुरु, जोषटवेदपुरान ॥ ६८

प्रथमज्ञानसमुझेनहीं, विधिनिषेधव्यवहार ॥
उचितानुचितहिंहेरिधारि, करतबकारियसँभार
जबमनमहठहरायविधि, श्रीगुरुवरपरसाद ॥
इहिविधिपरमातमलखै, तुलसीमिटैविषाद ७
बरबसकरतविरोधहठि, होनचहतअकहीन ॥
गहिगतिबकवृकश्वानइव, तुलसीपरमप्रवीन
आककर्मभेषजविदित, लखतनहींमतिहीन ॥
तुलसीशठअकवशबिहठि, दिनदिनदीनमली
करताहीतेकर्मयुग, सोगुणदोषसरूप ॥
करतभोगकरतव्यथा, होयरंककिनभूप ॥ ७
वेदपुराणरुशास्त्रयुत, निजबुधिवलअनुमान ।
निजनिजकरिकरिहैबहुरि, कहुतुलसीपरमान
विविधप्रकारकथनकरै, जाहियथाभवमान ॥
तुलसीसुगुरुप्रसादबल, कोउकोउकहतप्रमान
उरडरअतिलघुहोनकी, भवलघुरतिभुलान
स्वर्गलाहलखिपरतनहिं, लखतलोहकोहान

नैनदोषनिजकहतनहिं, विविधबनावतबात ॥
सहतजानितुलसीविपति, तदपिननेकलजात ७७
करतचातुरीमोहवश, लखतननिजहितहान ॥
शुकमरकटइवगहतहठ, तुलसीपरमसुजान ॥७८॥
दुखियासकलप्रकारशठ, समुझिपरतहीनाहिं ॥
लखतनकण्टकमीनजिमि, अशनभषतभ्रमनाहिं७९
तुलसीनिजमनकामना, चहतशून्यकहँसेय ॥
वचनगायसबकेविविध, कहहुपयसकहिदेय८०॥
बातहिबातहिबनिपरै, बातहिबातनशाय ॥
बातहिआदिहिदीपभव, बातहिअन्तबताय ॥८१॥
बातहितेबनिआवई, बातहितेबनिजात ॥
बातहितेबरबरमिलत, बातहितेबौरात ॥ ८२ ॥
बातबिनाअतिशयविकल, बातहितेहरषात ॥
बनतबातबरबातते, करतबातबरघात ॥ ८३ ॥
तुलसीजानेबातबिन, बिगरतहरइकबात ॥
अनजानेदुखबातके, जानिपरतकुशलात ॥८४॥

प्रेमवैरऔपुण्यअघ, यशअपयशजयहान ॥
बातबीजइनसबनको,तुलसीकहहिंसुजान॥८५॥
सद्धाभजनगुरुसाधुद्विज, जीवदयासमजान ॥
सुखदसुनैरतसत्यव्रत, स्वर्गसप्तसोपान ॥ ८६ ॥
बंचकविधिरतनरतनय,विधिहिंसाअतिलीन ॥
तुलसीजगमहँविदितवर;नरकनिशेनीतीन ८७॥
जेनरजगगुणदोषयुत, तुलसीवदतविचार ॥
कबहुँसुखीकबहूँदुखित,उदयअस्तव्यवहार८८॥
कारजजगकेगुगलतम, कालअचलबलवान ॥
त्रिविधविकलतेतेहटहिं,तुलसीकहहिंप्रमान ८९॥
अनुभवअमलअनूपगुरु, कछुकशास्त्रगतिहोय ॥
बचैकालक्रमदोषते, कहहिसुबुधसबकोय॥९०॥
सबविधिपूरणधामवर, रामअपरनहिंआन ॥
ताकीकृपाकटाक्षते, होतहियेदृढज्ञान ॥ ९१ ॥
सोस्वामीसोतरसखा, सोवरसुखदातार ॥
तातमातआपदहरण, सोआसमयअधार ॥९२॥

सुखददुखदकारजकठिन, जानतकोतेहिनाहिं ॥
जानेहुपरबिनगुरुकृपा, करतबबनतनकाहिं ॥९३॥
तुलसीसकलप्रधानहै, बेदविदितसुखधाम ॥
तामहँसमुझबकठिनअति, युगलभेदगुणनाम ९४॥
नामकहतसुखहोतहै, नामकहतदुखजात ॥
नामकहतसुखजातदुरि, नामकहतदुखखात ९५॥
नामकहतवैकुण्ठसुख, नामकहतअघखान ॥
तुलसीतोतेउरसमुझि, करहुनामपहिचान ॥९६॥
चारोंचौदहअष्टदश, रससमुझबभरिपूर ॥
नामभेदसमुझेबिना, सकलसमुझमहँधूर ॥ ९७ ॥
बारदिवसनिशिमाससित, असितबरषपरमान ॥
उत्तरदक्षिणआशरवि, भेदसकलमहँजान ॥९८॥
कर्मशुभाशुभमित्रअरि, रोदनहँसनबखान ॥
औरभेदअतिअमितहैं, कहँलगिकहियप्रमान९९॥
जहँलगिजनदेखबसुनब, समुझबकहबसुरीत॥
भेदरीतकछुहैनहीं, तुलसी हिंविनीत॥१००॥

भेदयाहिविधिनाममहँ, बिनगुरुजाननकोय १०
तुलसीकहहिविनीतवर, ज्योंविरंचिशिवहोय

इति श्रीमद्गोसाईंस्वामीतुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांज्ञानसिद्धान्तयोगोनामषष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमःसर्गः ।

दोहा-तिनहिंपढोतिनहींसुने, तिनहिंसुमतिपरका
जिनआशापाछेकरे, गहेअलखनीसास ॥ १ ॥
तबलगियोगीजगतगुरु, जबलगिरहैनिरास ॥
जबआशामनमेंजगी, जगगुरुयोगीदास ॥ २ ॥
हितपुनीतस्वारथसबहि, अहितअशुचिबिनचाउ
निजमुखमाणिकसमदशन, भूमिपरतभोहाउ ॥ ३ ॥
निजगुणघटतननागनग, हर्षिनपहिरतकोल ॥
गुञ्जाप्रभुभूषणकरे, तातेबढनमोल ॥ ४ ॥
देइसुमनकरिवासतिल, परिहरिखरिरसलेत ॥
स्वारथहितभूतलभरे, मनमेंचकतनसेत ॥ ५ ॥

असुवनपथिकनिराशते, तटभुइसजलसरूप ॥
तुलसीकिनबंचेनहीं, इनसबथलके कूप ॥ ६ ॥
तुलसीमित्रमहासुखद, सबहिमित्रकीचाउ ॥
निकटभयेविलसतसुखप, एकछपाकरछाउ ॥७॥
मित्रकोपबरतरसुखद, अनहितमृदुलकराल ॥
द्रुमदलशिशिरसुखातसब, सहनिदाघअतिलाल ८
खलनेरेगुणमाननाहिं, मेंटहिदातावोप ॥
जिमिजलतुलसीदेतरवि, जलदकरततेहिलोप॥९॥
बर्षतहर्षतलोगसब, कर्षतलखतनकोय ॥
तुलसीभूपतिभानुसम, प्रजाभागवशहोय ॥१०॥
मालीभानुकृशानुसम, नीतिनिपुणमहिपाल ॥
प्रजाभागवशहोहिंगे, कबहिंकबहिंकलिकाल ११॥
समयपरेसुपुरुषनरन, लघुकारिगनियनकोय ॥
नायकपीपरबीजसम, बचैतोतरुवरहोय ॥ १२ ॥
बडेरामरतजगतमें, कैपरहितचितजाहि ॥
प्रेमपैजनिबहीजिन्हें, बड़ोसोसबहीचाहि ॥१३॥

तुलसीसन्तनतेसुनैं, सन्ततइहैविचार ॥
तनधनचञ्चलअचलजग, युगयुगपरउपकार १
ऊँचहिआपदविभववर, नीचहिदत्तनहोय ॥
हानिवृद्धिद्विजराजकहँ,नहिंतारागणकोय॥ १
बड़ेरतहिंलघुकेगुणहिं, तुलसीलघुहिनहेत ॥
गुञ्जातेमुक्ताअरुण, गुञ्जाहोतनश्वेत ॥ १६ ॥
होहिंबडेलघुसमयसह, तोलघुसकहिनकाढि ।
चन्द्रदूबरोकूबरो, तऊनखततेबाढ़ि ॥ १७ ॥
उरगतुरगनारीनृपति, नरनीचोहथियार ॥
तुलसीपरखतरहबनित,इनाहिंनपलटतवार॥ १
दुर्जनआपसमानकरि, कोरखैंहितलागि ॥
तपततोयसहजाहिपुनि, पलटिबतावतआगि १
मन्त्रतन्त्रतन्त्रीत्रिया, पुरुषअश्वधनपाठ ॥
पुनिगुनयोगावियोगते, तुरतजाहिंयेआठ ॥ २
नीचनिचाईनहिंतजै, जोपावहिसतसंग ॥
तुलसीचन्दनविटपबासि,विनाविषभयनभुजंग

दुर्जनदर्पणसमसदा, करिदेखोहियदौर ॥
सन्मुखकीगतिऔरहै, विमुखभयेकछुऔर॥२२।
मित्रकअवगुणमित्रको, परपहँभाषतनाहिं ॥
कूपछांहजिमिआपनी, राखतआपहिमाहिं॥२३।
तुलसीसोसमरथसुमति, सुकृतीसाधुसुजान ॥
जोविचारिव्यवहरतजग, खर्चलाभअनुमान २४
सीखसखासेवकसचिव, सुतियसिखावनसांच ।
सुनिकरियेपुनिपरिहरिय, परमनरंजनपांच २५।
पुष्टहिनिजरुचिकाजकरि, रुष्टहिकाजबिगारि॥
तियातनयसेवकसखा, मनकेकण्टकचारि २६।
नारिनगरभोजनसचिव, सेवकसखाअगार ॥
सरसपरिहरेरंगरस, निरसविषादविकार ॥ २७।
दीरघरोगीदारिदी, कटुवचलोलुपलोग ॥
तुलसीप्राणसमानज्यों, तुरतत्यागिबेयोग॥२८।
घायलगेलोहाललकि, खैंचिउलेइयनीच ॥
समरथपापीसोंबयर, तीनबेसाहीमीच ॥ २९।

तुलसीस्वारथसामुहे, परमारथतनपीठि ॥
अन्धकहेदुखपावकाहि, डिठियारेहियडीठि
अनसमुझैनेशोचवर, अवशिसमुझियेआप
तुलसीआपनसमुझिबिन,पलपलपरपरिताप
कूपखनहिंमन्दिरजरत, लावहिंधारिबबूर ॥
बोयेलुनचहसमयबिन, कुमतिशिरोमणिकूर
निडरअनयकरिअनकुशल, बीसबाहुसमहोय
गयोगयोकहसुमतिजन, भयोकुमतिकहकोय
बहुसुतबहुरुचिबहुवचन, बहुअचारव्यवहार
इनकोभलोमनाइबो, इहअज्ञानअपार ॥ ३
अपयशयोगकिजानकी, मणिचोरीकीकान्ह
तुलसीलोगरिझाइबो, करसिकातिबोनान्ह
मांगिमधुकरीखातजे, सोवतपांवपसारि ॥
पापप्रतिष्ठाबढ़िपरी, तुलसीबाढ़ीरारि ॥
लहीआँखिकबआँधरहिं, बांझपूतकबजाय
कबकोढ़ीकायालही, जगबहराइचजाय ॥

याजगकीविपरीतिगति, काहिकहौंसमुझाइ ॥
जलजलिगोझखबांधिगो, जनतुलसीमुसुकाइ३८
कैजूझिबोकिबूझिबो, दानकिकायकलेश ॥
चारिचारुपरलोकपथ, यथायोगउपदेश ॥३९॥
बुधकिमानसरवेदबन, मतेखेतसबसींच ॥
तुलसीकृषिगतिजानिबो,उत्तममध्यमनीच४०॥
सहिकुबोलसासतिअसम, पायअनटअपमान ॥
तुलसीधर्मनपरिहरहिं, तेवरसन्तसुजान ॥४१॥
अनहितज्योंपरहितकिये, आपनहिततमजान ॥
तुलसीचारुविचारमति, करियकाजसममान४२
मिथ्यामाहुरसजनकहँ, खलहिंगरलसमसाँच ॥
तुलसीपरसिपरातजिमि, पारदपावकआँच ४३
तुलसीखलवाणीविमल, सुनिसमुझबहियहेरि ॥
रामराजबाधकभई, मन्दमन्थराचेरि ॥ ४४ ॥
दानदयादिकयुद्धके, वीरधीरनहिंआन ॥
तुलसीकहहिंविनीतइति, तेनरवरपरिमान ४५ ॥

तुलसीसार्थाविपतिके, विद्याविनयविवेक ॥
सा ससुकृतससत्यव्रत, रामभरोसोएक ॥४६
तुलसीअसमयकेसखा, साहसधर्मविचार ॥
सुकृतशीलस्वभावरिज, रामशरणआधार॥४७
विद्याविनयविवेकरति, रीतिजासुउरहोय ॥
रामपरायणसोसदा, आपदताहिनकोय ॥ ४८
बिनप्रपञ्चखलुभीखभलि, नहिंफलकियकलेश
वामनबलिसोंलीन्हिछलि, दीन्हसबहिउपदेश
बिबुधकाजवामनबलिहि,छलोभलोजियजानि
प्रभुतातजिवशभेतदपि, मनतेगइनगलानि ५०
बढ़ेबढ़तेछलकरैं, जनमकनौडहोहिं ॥
तुलसीश्रीपतिशिरलसैं,बलिवामनगतिसाहिं ५
खलउपकारविकारफल, तुलसीजानजहान
मेखटमरकटवणिकबक, कथासत्यउपखान ५
ज्योंमूरखउपदेशके, होतेयोगजहान ॥
दुर्योधनकहबोधकिन, आयेश्यामसुजान ५२
हितपरबढ़तविरोधजब, अनहितपरअपमान ।

ामविमुखविधिबामगति, सगुनअघायअमान ॥
ाहसहीसिखकोपवश, कियेकठिनपरिपाक ॥
ाठसंकटेभाजनभये, हठिकुजतीकपिकाक ५५॥
ारिसौंहकरिखोजलें, करिमतसबबिनत्रास ॥
ुयेनीचबिनमीचते, जेइनकेविश्वास ॥ ५६ ॥
ीकआपनीबूझपर, खीझविचारविहीन ॥
ोउपदेशनमानहीं, मोहमहोदधिमीन ॥ ५७ ॥
ामुझिसुनीतकुनीतरत, जागतहीरहसोय ॥
ापदेशिबोजगाइबो, तुलसीउचितनहोय॥५८॥
ारमारथपथमतसमुझि, लसतविषयलपटान ॥
ातरिचितातेअधजरी, मानहुँसतीपरान ॥५९॥
जतअमियउपदेशगुरु, भजतविषयविषखान ॥
ान्द्रकिरणधोखेपयस, चाटतजिमिशठश्वान६०
ारसद्दतनतीरथपुरिन, निपटकुचालिकुसाज ॥
नहुँमवासेमारिकलि, राजतसहितसमाज ६१॥
ारचतुरबटमारभट, प्रभुप्रियभरुआभण्ड ॥
ाबभक्षीपरमारथी, कलिसुपन्थपाखण्ड ॥६२॥

गोलगँवारनृपालकलि,जमनमहामहिपाल ॥
सामनदामनभेदकलि, केवलदण्डकराल ॥ ६३
कालतोपचीतुपकमहि, दारूअयनकराल ॥
पापपलीताकठिनगुरु, गोलापुहुमीपाल ॥ ६४
रागरोषगुणदोषको, साक्षीहृदयसरोज ॥
तुलसीविकसतमित्रलखि सकुचतदेखिमनोज
वैरसनेहसयानपहि, तुलसीजोनहिंजान ॥
तेकिप्रेमपगमगधरत, पशुविनपूंछबखान ॥ ६६
रामदासयहजायकै, जोनरकथहिसयान ॥
तुलसीअपनेखांडमहँ, खाकमिलावतश्वान६७
त्रिविधिएकविधिप्रभुअगुण, प्रजहिंसँवारहिंराउ
करतेहोतकृपाणको, कठिनघोरघनघाउ ॥ ६८
कालविलोकतईशरुख, भानुकालअनुहार ॥
रविहिराहुराजहिंप्रजा, बुधव्यवहरहिविचार६९
यथाअमलपावनपवन, पापसुसंगकुसंग ॥
कहियसुवासकुवासतिमि, कालमहीशप्रसंग७०
भलउचलतपथशोचभय, नृपनियोगनयनेम ॥

हृतियसुभूषणभूषियत, लोहनिवारितहेम ॥७१॥
सुधाकुनाजसुनाजपल, आमअशनसमजान ॥
सुमप्रभुप्रजाहितलेहिकर, सामादिकअनुमान ७२॥
ाकेपक्कयेविटपदल, उत्तममध्यमनीच ॥
ऌलनरलहहिनरेशतिमि, करिविचारमनबीच ७३
ारणिधेनुचरिधरमतन, प्रजासुवत्सपन्हाय ॥
ाथकछूनहिंलागिहै, कियेगोष्ठकीगाय ॥७४॥
कटंकहैपरतगिरि, शाखासहसखजूरि ॥
रहिकुनृपकरिकरिकुनय, सोकुचालभुविभूरि॥
मिरुचिररावणसभा, अङ्गदपदमहिपाल ॥
मरामनयसीमबल, अचलहोततिहुँकाल॥७६॥
ातिरामपदनीतिरत, धर्मप्रतीतस्वभाय ॥
भुहिनप्रभुतापरिहरै, कबहुँवचनमनकाय ७७॥
रकेकरमनकेमनहिं, वचनवचनजियजानि ॥
पतिभलहिनपरिहरहिं, विजयविभूतिसयानि ॥
ोलीबाणसुमत्तसुर, समुझिउलटिगतिदेखु ॥
तममध्यमनीचप्रभु, वचनविचारुविशेखु ७९

शत्रुसयानेसलिलइव, राखशीशअपुनाव ॥
बूड़तलखिडगमगतअति, चपारिचहूँदिशिधाव८
रच्यतराजसमाजघर, तनधनधर्मसुबाहु ॥
सत्यसुसचिवहिसौंपिसुख,बिलसहिंनिजनरना
रसनामन्त्रीदशनजन, तोषपोषसबकाज ॥
प्रभुकैसेनृपदानवृक, बालकराजसमाज ॥ ८२
लकरीडौवाकरछुली, सरसकाजअनुहारि ॥
सुप्रभुजुगहहिंनपरिहरहिं, सेवकसखाविचारि८
प्रभुसमीपछोटेबड़े, अचलहोहिबलवान॥
तुलसीविदितविलोकहीं, करअँगुलीअनुमान
तुलसीभलवरणतबढ़त, निजमूलहिअनुकूल ॥
सकलभाँतिसबकहँसुखद,दलनसहितबिनफूल८
सधनसगुणसधरमसगण, सजनसुसबलमहीप
तुलसीजेअभिमानबिन, तेत्रिभुवनकेदीप॥८६
साधनसमयसुसिद्धलहि, उभयमूलअनुकूल
तुलसीतीनौंसमयसम, तेमहिमङ्गलमूल ॥८७
रामायणअनुहरतशिष, जगभौभारतरीति ॥

तुलसीशठकीकोसुनै, कलिकुचालिपरप्रीति ८८
सुहितसुखदगुणयुतसदा, कालयोगदुखहोय ॥
घरधनजारतअनलजिमि,त्यागेसुखनहिंकोय ८९
तुलसीसरवरखम्भजिमि, तिमिचेतनपटमाहिं ॥
नहिंसूखतपनहुतनसो, समुझसुबुधजनताहिं ९०
तुलसीझगराबड़ेनके, बीचपरहुजनिधाय ॥
लहैलोहपाहनदोऊ, बीचरुईजरिजाय ॥ ९१ ॥
अर्थआदिहनपरिहरहु, तुलसीसहितविचार ॥
अन्तगहनसबकहँसुने, सन्तनमतसुखसार ९२॥
गहुउपकारविचारपद, माफलहानिविमूल ॥
अहोजानुतुलसीयतन, बिनजानेइवशूल॥९३ ॥
नीचनिरावहिंनिरसतरु, तुलसीसींचहिऊख ॥
पोषतपयदसमानजल, विषयऊखकेरूख ॥९४॥
लोकवेदहूँलौंदगी, नामभूलकोपोच ॥
धर्मराजयमराजयम, कहतसकोचनशोच॥९५॥
तुलसीदेवलरामके, लागेलाखकरोर ॥
काकअभागेहगिभरे, महिमाभयउनथोर ॥९६॥

भलोकहहिंजानेबिना, कीअथवाअपवाद ॥
तुलसीगांड़रजानिजिय,करहुनहर्षविषाद॥९७॥
तनधनमहिमाधर्मजेहि, जाकहँसहअभिमान ॥
तुलसीजियतविडम्बना, परिणामहुगतिजान९८
बडोबिबुधदर्बारते, भूमिभूपदर्बार ॥
जापकपूजकदेखियत, सहतनिरादरभार ॥९९॥
खगमृगमीनपुनीतकिय, बलहुरामनेपाल ॥
कुनइबालरावणघरहि,सुखदबन्धुकियकाल१००
रामलषणविजयीभये, सुनहुगरीबनिवाज ॥
मुखरबालिरावणगये,घरहीसहितसमाज॥१०१॥
द्वारेटाटनदेसकहिं, तुलसीजेनरनीच ॥
निदरहिंबलिहरिचन्दकहँ, किहुकाकरनदधीच॥
तुलसीनिजकीरतिचहहिं, परकीरतिकहँखोय ॥
तिनकेमुहँमसिलागिहै,मिटहिनमरिहैंधोय १०३
नीचचंगसमजानिबो, सुनिलखितुलसीदास ॥
ढीलदेतमहिगिरिपरत, खैंचतचढतअकाश१०४
सहवीसीकांचीभषै,पुरजनपाकप्रवीन ॥

कालक्षेपकिहिविधिकरै,तुलसीखगमृगमीन १०५
बड़ेपापबाढेकिये, छोटेकरतलजात ॥
तुलसीतापरसुखचहत, विधिपरबहुतरिसात १०६
सुमतिनिवा हिंपरिहरहिं, दलसुसनहुसंग्राम ॥
सकलगयेतनबिनभये, साखीयादवकाम॥ १०७॥
कलहनजानबिछोटकरि, कठिनपरमपरिणाम ॥
लगतअनलअतिनीचघर, जरतधनिकधनधाम॥
जूझेतेभलबूझिबो, भलोजीततेहारि ॥
जहाँजाइजहँडाइबो, भलोजोकियविचारि १०९
तुलसीतीनप्रकारते, हितअनहितपहिचान ॥
बरबसपरेपरोसवश, परेमामलाजान ॥ ११० ॥
दुर्जनवदनकमानसम, वचनविमुञ्चततीर ॥
सज्जनउरबेधतनहिं, क्षमासमाहशरीर ॥ १११॥
कौरवपाण्डवजानिबो, क्रोधक्षमाकेसीम ॥
पाँचहिमारिनशौसके, सबोनिपातेभीम ११२॥
जोमधुदीन्हेतेमरै, माहुरदेउनताउ ॥
जगजितिहारेपरशुधर, हारिजितेरघुराउ ११३॥

क्रोधनरसनाखोलिये, बडखोलबतरवारि ॥
सुनतमधुरपरिणामहित, बोलतवचनविचारि ॥
तुलसीमीठोसमयते, मांगीमिलेजुमीच ॥
सुधासुधाकरसमयबिन, कालकूटतेनीच ११५॥
पाहींखेतीलगनबड़ि, ऋणकुव्याजमगखेतु ॥
बैरआपतेबड़नते, कियोपांचदुखहेतु ॥ ११६ ॥
रीझखीझगुरुदेतशिष, शिषहिसुसाहबसाध ॥
तोरिखायफलहोयभल, तरुकाटेअपराध ११७॥
चढ़ोबबूरहिचंगजिमि, ज्ञानतेशोकसमाज ॥
कर्मधर्मसुखसम्पदा, तिमिजानिबोकुराज ११८॥
पेटनफूटतबिनकहे, कहेनलागतढेर ॥
बोलबवचनविचारयुत, समुझिसुफेरकुफेर ११९॥
प्रीतिसगाईसकलविधि, बनिजउपायअनेक ॥
कलबलछलकलिमलमलिन, डहकतएकहिएक ॥
दम्भसहितकलिधर्मसब, छलसमेतव्यवहार ॥
स्वारथसहितसनेहसब, रुचिअनुहरतअचार ॥
धातुबधीनिरुपाधिवर, सद्गुरुलाभसुभीत ॥

दम्भदरशकलिकालमहँ,पोथिनसुनबसुनीत १२२
फोरहिंमूरखशिलसदन, लागेअढुकपहार ॥
कायरकूरकपूतकलि, घरघरसरिसउहार १२३ ॥
ज्योंजगदीशतोअतिभलो, ज्योंमहीशतोभाग ॥
जन्मजन्मतुलसीचहत, रामचरणअनुराग १२४
काभाषाकासंसकृत, विभवचाहियेसांच ॥
कामतोआवेकामरी, कालैकरियकमाच १२५॥
वरणविशदमुक्तासरिस, अर्थसूत्रसमतूल ॥
सतसैयाजगवरविशद, गुणशोभासुखमूल १२६॥
वरमालाबालासुमति, उरधारैयुतनेह ॥
सुखशोभासरसायनित, लहैरामपतिगेह॥ १२७॥
भूपकहहिंलघुगुणिनकहँ, गुणीकहहिंलघुभूप ॥
महिगिरिगतदोउलखतजिमि, तुलसीखरबसरूप
दोहाचारुविचारुचलु, परिहरिवादविवाद ॥
सुकृतसीमस्वारथअवधि, परमारथमर्याद १२९॥

इति श्रीमद्गोसाइंस्वामितुलसीदासविरचितायांसप्तशतिकायांराजनीतिप्रस्ताववर्णनंनामसप्तमःसर्गः ॥७॥ इति तुलसी सतसई समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका पता-
खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.